स्मारिका
श्री नन्दलाल बाजोरिया शिक्षा निकेतन. अस्सी, वाराणसी

भूमिः कीर्तिर्यशो लक्ष्मीः पुरुषं प्रार्थयन्ति हि ।
सत्यं समनुवर्तन्ते सत्यमेव भजते ततः ।।

दत्तमिष्टं हुतं चैव तप्तानि च तपांसि च ।
वेदाः सत्यप्रतिष्ठानांस्तस्मात् सत्यपरो भवेत् ।।

पृथ्वी, कीर्ति, यश और लक्ष्मीये सबकी सब सत्यवादी पुरुषको पानेकी इच्छा रखती हैं और शिष्ट पुरुष सत्यका ही अनुसरण करते हैं। अतः मनुष्यको सदा सत्यका ही सेवन करना चाहिए।

दान, यश, होम, तपस्या और वेद–इन सबका आधार सत्य ही है; इसलिए सबको सत्यपरायण होना चाहिए।

( बाल्मीकीय रामायण )

# वीणा

स्मारिका–१९८९

संरक्षक :

श्रीमती वीणाजी बाजोरिया

निर्देशक :

डा० ठाकुरप्रसाद वर्मा

श्री नागरप्रसाद शर्मा (दाधीच)

प्रधान सम्पादिका :

श्रीमती शिवकुमारी वर्मा

सम्पादक :

शरद कुमार शुक्ल

मुद्रक :

हिन्द प्रिंटिंग वर्क्स

भदैनी, वाराणसी

आवरण :

खण्डेलवाल प्रेस

वाराणसी

प्रकाशक :

श्रीनन्दलाल बाजोरिया

शिक्षा निकेतन

अस्सी–वाराणसी

फोन : ६२२४१ पी. पी.

# * वीणा *

## अनुक्रमणिका


| क्रम सं० | लेख | लेखक | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|
| १. | वार्षिक विवरण | | १ से ७ |
| २. | यज्ञ के मण्डप से इस देश में शंख सी गूंज रही यह गंगा | श्रीमती सुशीला मिश्रा | ९ |
| ३. | पेड़ से भी गया बीता | संकलित | ११ |
| ४. | बिल्ली बोली म्याऊँ-म्याऊँ | आचार्य श्री भालचन्द्र पाण्डेय | १२ |
| ५. | प्रायश्चित | श्री एस० मोहन | १३ |
| ६. | पीछे-आगे | श्री जयशंकर बाजपेयी | १४ |
| ७. | वाणी से नौकर मंत्री राजा की परख | संकलित | १५ |
| ८. | आज और कल के पिता | श्री अकेला भाई | १६ |
| ९. | अमर शहीद चन्द्रशेखर 'आजाद' | श्री ज्ञानदेव रामचन्द्र चौधरी | १७ |
| १०. | जीवन की मुस्कान | श्री राजेन्द्रकृष्ण श्रीवास्तव | १८ |
| ११. | हमारा मोह किससे ? लक्ष्मी या परमात्मा से | श्रीमती पुष्पा सिंह | १९ |
| १२ | ईर्ष्या | गणेश शर्मा, कक्षा–८ | २० |
| १३. | बाल-चालीसा | नरेश शर्मा, कक्षा–८ | २० |
| १४. | इतिहास में हाथी | संकलित | २१ |
| १५. | दीवाली | रेनू मिश्रा, कक्षा–८ | २२ |
| १६. | बिना स्नेह की बाती जल रही है | श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया | २३ |
| १७. | सम्मोहन-शक्ति | श्रीमती अरुणा त्रिपाठी 'अनु' | २५ |
| १८. | चट्टान की रोशनी | मधुपाल सिंह, कक्षा–८ | २७ |
| १९. | मुन्ने की फरियाद | श्री बच्चन पाठक 'सलिल' | २८ |
| २०. | काशी : धार्मिकता के आइने में | अखिलेश मिश्र | २९ |
| २१. | चुटकुला | लेखनी मिश्रा कक्षा–८ | ३० |
| २२. | काम छोटा और बड़ा | संकलित | ३१ |
| २३. | श्रेष्ठ बाल-साहित्य | श्री चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक' | ३२ |
| २४. | सोते हो ? नहीं, जीते हो ? नहीं | संकलित | ३३ |
| २५. | गुलाब की प्रसन्नता का रहस्य | " | ३३ |
| २६. | ममता | राजेन्द्र कुमार शर्मा, कक्षा–७ | ३४ |
| २७. | लोमड़ी दादी | श्री जयशंकर बाजपेयी | ३५ |
| २८. | गन्दे कमण्डलु में खीर की भिक्षा | संकलित | ३६ |


***

स्वर्गीय श्रीनन्दलालजी बाजोरिया
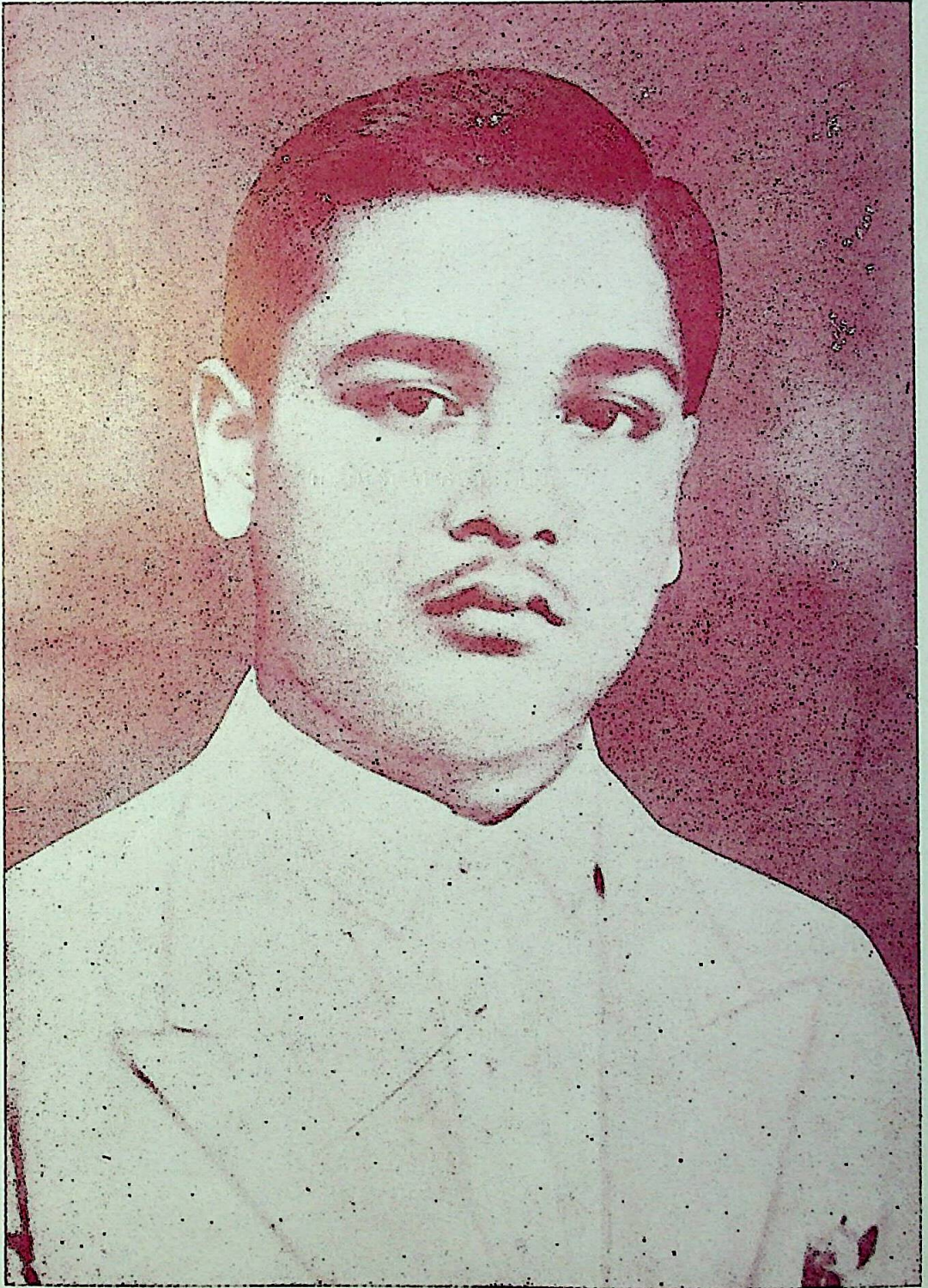
जिनकी पुण्य-स्मृति में यह शिक्षा निकेतन संचालित है ।

# हमारे प्रेरणा-स्रोत

श्रीमतीगायत्रीदेवीजी बाजोरिया

श्रीदेवीप्रसादजी बाजोरिया

श्रीमतीवीणाजी बाजोरिया

# गतवर्ष १९८८ का सभा मंच
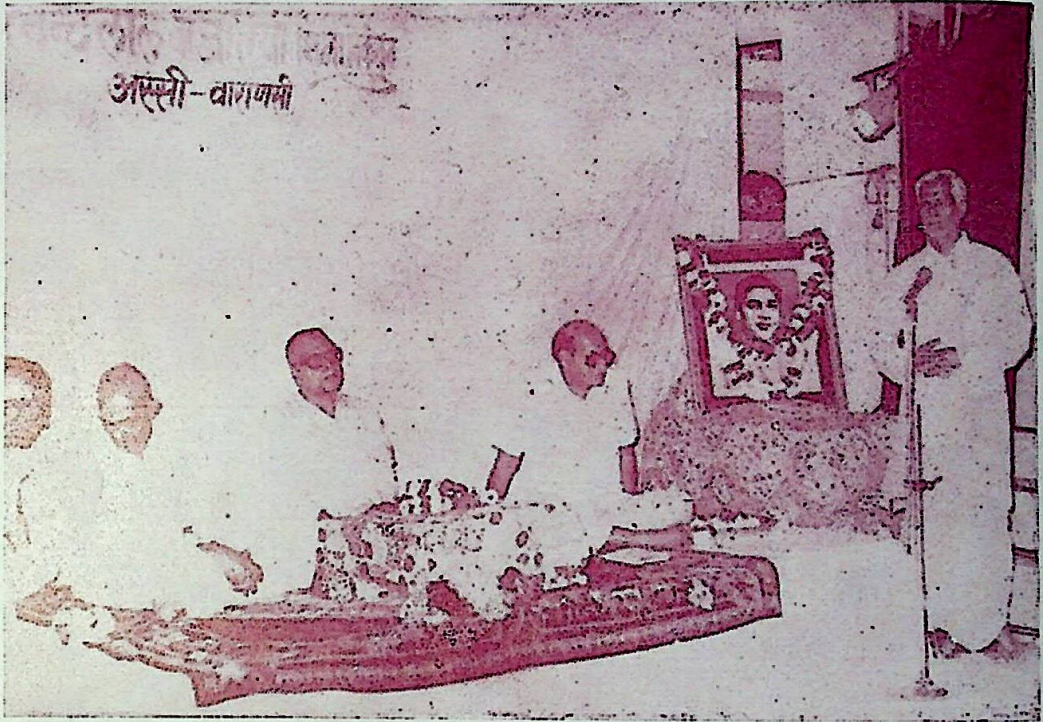
शिक्षा निकेतन के उपाध्यक्ष पं० श्रीबद्रीप्रसादजी तिवारी ( एडवोकेट )
अतिथियों का स्वागत करते हुए ।

बैठे हुए बाएँसे–श्रीरघुनन्दनप्रसादजी डालमिया, पं० श्रीरामजीलालजी शास्त्री, पं० श्रीचन्द्रभूषणधरजी द्विवेदी (सभाध्यक्ष) एवं भूतपूर्व उप शिक्षानिदेशक श्रीरामचन्द्रजी माहेश्वरी (मुख्य अतिथि)
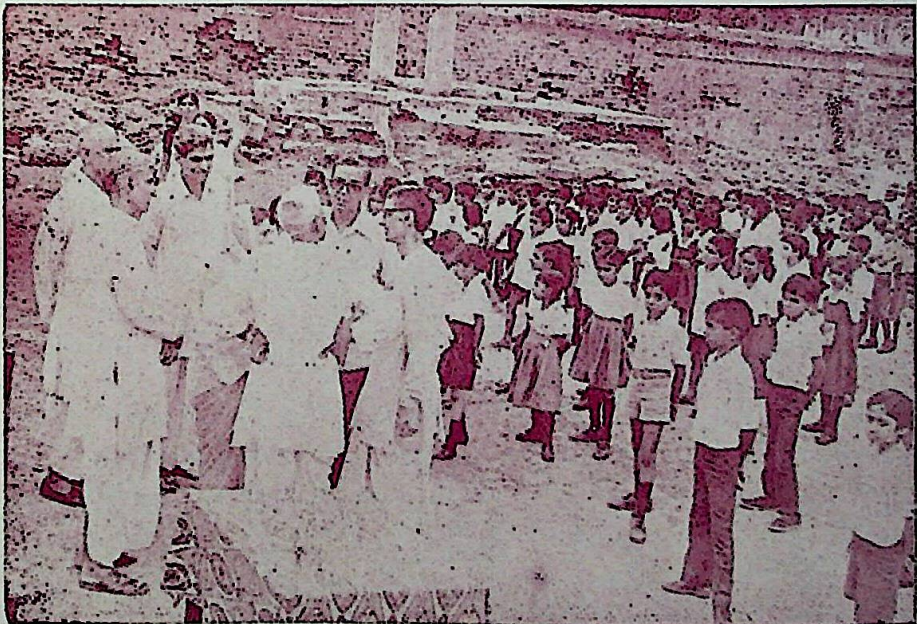
विगत वर्षों में अपने वाराणसी प्रवास के दौरान अधिकारियों से निकेतन का विवरण प्राप्त करते हुए बाबू श्रीभगवतीप्रसादजी बाजोरिया ।
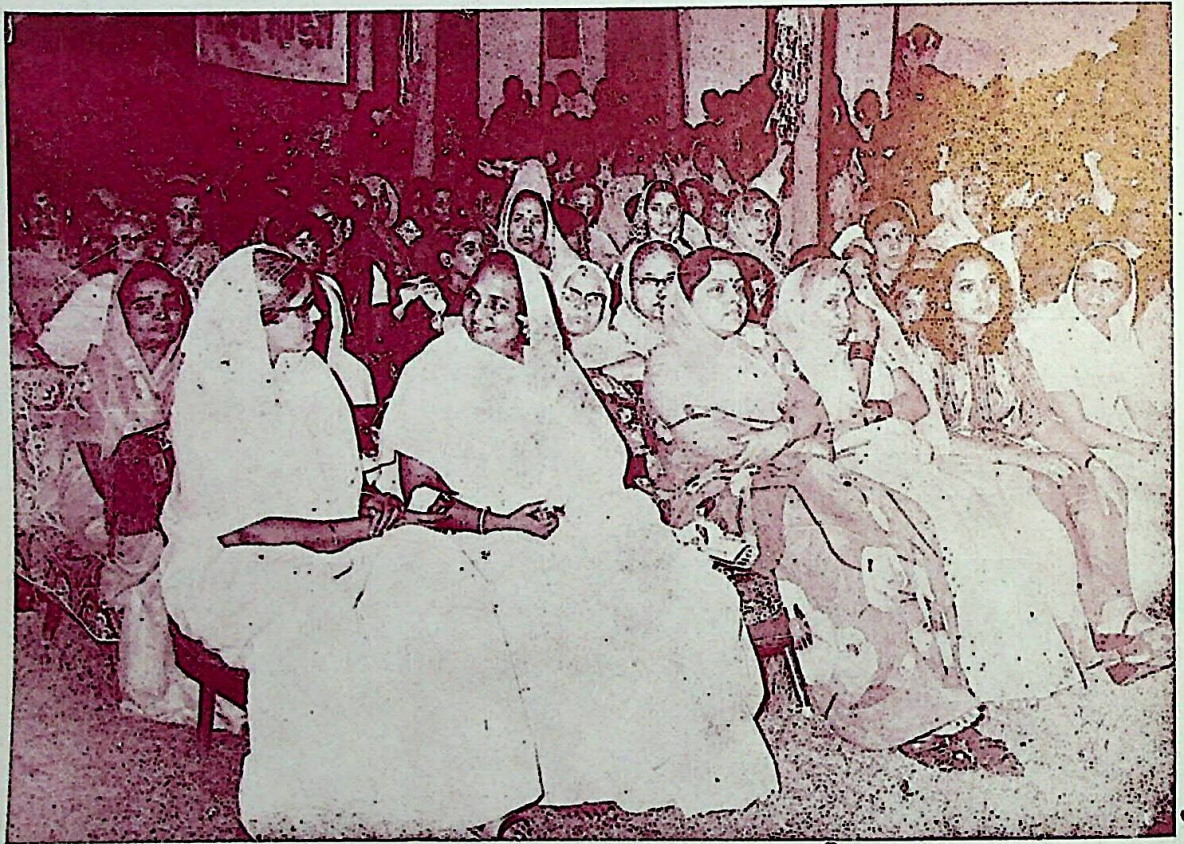
शिक्षा निकेतन के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपस्थित महिला वर्ग

# वार्षिक प्रतिवेदन

सम्मान्य सभापति महोदय, भाइयों एवं बहनों !

शिक्षा निकेतन की स्थापना जुलाई १९७४ में श्रीमती गायत्रीदेवी बाजोरिया की प्रेरणा से उनकी पुत्र-वधू श्रीमती वीणाजी बाजोरिया ने की थी। इसकी स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर की गयी थी उनको हम पूरी शक्ति से पूरा करने में जुटे हुए हैं और हमें यह घोषणा करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि इसमें हम काफी सीमा तक सफल हुए है। इसके लिए स्थानीय जनता तथा अभिभावकों का स्नेह और सहयोग हमें मिलता रहा है। हमारा यह प्रयास है कि आधुनिक ढंग से मनोवैज्ञानिक शोधों पर आधारित अच्छे स्तर की शिक्षा उन लोगों के लिए उपलब्ध कराई जाय जो अधिक पैसे व्यय नहीं कर सकते।

निकेतन में अत्यन्त सामान्य शुल्क लिया जाता है और उसमें भी प्राइमरी अनुभाग के अधिकांश छात्र-छात्रायें शुल्क मुक्ति की सुविधा पा रहे हैं। पिछले वर्षों में स्थानाभाव के कारण हम अभिभावकों के आग्रह और प्रयास के कारण अपनी क्षमता और इच्छा से कहीं अधिक छात्रों को लेते रहे हैं जिसके कारण काफी असुविधा का सामना करना पड़ा अतः गत वर्षों से छात्रों के प्रवेश में काफी सावधानी बरतनी पड़ रही है। निकेतन को जूनियर हाई स्कूल की अस्थायी मान्यता प्राप्त हो चुकी है अतः कक्षा ६, ७ व ८ में शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित शुल्क ही लिया जाता है। स्थायी मान्यता हेतु प्रयास जारी है आशा है शीघ्र ही स्थायी मान्यता प्राप्त हो जायेगी। शिशु एवं प्राइमरी अनुभाग के शिक्षण शुल्क में भारी संख्या में शुल्क मुक्ति दी जा रही है। इस वर्ष निकेतन में कुल ३४५ छात्र हैं जिनमें शिशु एवं प्राइमरी अनुभाग में २५७ तथा जू० हा० स्कूल अनुभाग में ८८ छात्र हैं। शिक्षा निकेतन निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

सम्प्रति निकेतन में १२ अध्यापक-अध्यापिकाएँ हैं, जिनमें से अधिकांश प्रशिक्षित हैं, तथा दो परिचारिकाएँ एवं एक लिपिक कार्यरत हैं। आय-व्यय विवरण जो सर्वश्री चटर्जी एण्ड चटर्जी चारटर्ड एकाउन्टेण्ट द्वारा परीक्षित एवं प्रमाणित है आगे के पृष्ठों पर अंकित है।

हम सेठ नन्दलाल बाजोरिया चैरिटेबुल ट्रस्ट के आभारी हैं जिन्होंने अस्सी स्थित अपने भवन का निचला तल्ला हमें दे रखा है उसी में शिक्षा निकेतन संचालित है। संस्था के पास निजी भवन का अभाव है सम्प्रति विद्यालय दो पालियों में चल रहा है। प्रयास किया जा रहा है, लेकिन अभी तक कोई स्थान उपलब्ध नहीं हो सका है।

इस संस्था के संस्थापक सदस्य स्वर्गीय पं० गणपतिजी शर्मा को हम कभी नहीं भुला सकते जिनके द्वारा बराबर हमारा मार्ग दर्शन होता रहा। आज वे हमारे बीच नहीं हैं। हम शिक्षा निकेतन के अधिकारियों, शिक्षक एवं कर्मचारियों की ओर से उनके चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

बाजोरिया परिवार से हमारे शिक्षा निकेतन को जो स्नेह और संरक्षण प्राप्त हो रहा है उसके लिए आभार प्रकट करने को हमारे पास शब्द नहीं हैं। अन्त में मैं आप सभी महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ जो अपना अमूल्य समय निकालकर यहाँ पधारे हैं।

**राधेश्याम शर्मा**

मंत्री

# श्रीनन्दलाल बाजोरिया शिक्षा निकेतन, अस्सी, वाराणसी-५

## आय-व्यय विवरण १९८८-८९

( ३१ मार्च ८९ को समाप्त हुए वर्ष का )

| व्यय | | आय | |
|---|---|---|---|
| वेतन खर्च | ६३,६०६-०० | शिक्षण शुल्क व अन्य शुल्क | ५४,२२७-०५ |
| लेखन सामग्री छपाई व टंकण | ५८२-२५ | शिक्षण शुल्क व अन्य शुल्क ( जूनियर ) | १२,२८९-१६ |
| फुटकर खर्च | २९०-७५ | परीक्षा शुल्क | २,२६४-०० |
| पठन पाठन सामग्री खर्च | ५५-०० | जू० हा० परीक्षा शुल्क | २१७-०० |
| परीक्षा खर्च | ३,३६६-५० | वैंक व्याज (बचत खाता) | १,२३३-५२ |
| जू० हा० परीक्षा खर्च | १८८-५० | वैंक व्याज ( फिक्स डिपाजिट ) | ४,११०-०० |
| वार्षिकोत्सव एवं उत्सवादि खर्च | ६,८२२-२० | सहायता प्राप्त | १,०००-०० |
| यात्रा सवारी खर्च | १६३-२५ | वर्ष की अवधि में व्ययाधिक्य रहा | ५,३३३-५२ |
| विद्यार्थी सहायता खर्च | ४३९-२० | | |
| सामग्री का जीर्णोद्धार व सफाई चूना | ९७१-६५ | | |
| स्मारिका प्रकाशन खर्च | ३,८६३-९५ | | |
| वैंक चार्ज | ७४-०० | | |
| आडिट खर्च | २५१-०० | | |
| | ८०,६७४-२५ | | ८०,६७४-२५ |

| ह० शरदकुमार शुक्ल | ह० शिवकुमारी वर्मा | ह० राधेश्याम शर्मा | ह० बद्रीप्रसाद तिवारी | ह० चटर्जी एण्ड चटर्जी |
|---|---|---|---|---|
| (लेखापाल) | (मुख्याध्यापिका) | (मंत्री) | (उपाध्यक्ष) | (चारटर्ड एकाउन्टेन्ट) |
| | | | | (सील) |

# श्रीनन्दलाल बाजोरिया शिक्षा निकेतन, अस्सी, वाराणसी-५

## आर्थिक चिट्ठा ३१ मार्च १९८६

| दायित्व | | | परिसम्पद् | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **पूंजी** | | | फरनीचर | | ४,३९०-७० |
| गत वर्ष की | ८१,७५३-५४ | | सायकिल | | ४५९-४० |
| वर्ष की अवधि में भवन निर्माणार्थ स्मारिका विज्ञापन सहायता रूप में प्राप्त | १०,०००-०० | | अन्य सामग्री | | ७,१०२-३९ |
| | ९१,७५३-५४ | | फिक्स डिपाजिट | | ५५,०००-०० |
| वर्ष की अवधि में व्ययाधिक्य पूंजी में से घटाया | ५,३३३-५२ | | सुरक्षित कोष | | २,०००-०० |
| | | ८६,४२०-०२ | प्राभूत कोष | | २,५००-०० |
| | | | **बैंक व नकद शेष** | | |
| | | | यू० को० बैंक-भदैनी | १२,६९९-९८ | |
| | | | सेन्ट्रल बैंक - खोजवां | १,७१५-१० | |
| | | | नकद शेष | ५५२-४५ | |
| | | | | | १४,९६७-५३ |
| | | ८६,४२०-०२ | | | ८६,४२०-०२ |

हमने ३१ मार्च को समाप्त होने वाले वर्ष का उपरोक्त आर्थिक चिट्ठा एवं संलग्न आय-व्यय की लेखा पुस्तकों से जाँच की एवं तद्नुसार उन्हें ठीक पाया। शुल्क का विवरण कक्षानुसार वर्ष में छात्रों से प्राप्ति के आधार पर दिखाया गया है।

| ह० शरद कुमार शुक्ल | ह० शिवकुमारी वर्मा | ह० राधेश्याम शर्मा | ह० बद्रीप्रसाद तिवारी | ह० चटर्जी एण्ड चटर्जी |
|---|---|---|---|---|
| (लेखापाल) | (मुख्याध्यापिका) | (मंत्री) | (उपाध्यक्ष) | (चारटर्ड एकाउन्टेण्ट) (सील) |

# संस्था का उद्देश्य

(१) भारतीय संस्कृति के उन्नयन की दृष्टि से बालक-बालिकाओं को भारतीय संस्कृति के अनुरूप सब प्रकार की शिक्षा देना तथा प्रारम्भ से ही संस्कृत का ज्ञान कराना।

(२) छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य, मानसिक, शारीरिक एवं शैक्षणिक विकास में योग देना तथा अपने अन्तर्गत अन्य शाखायें खोलना और अन्य विद्यालयों तथा सामाजिक संस्थाओं को अपने में संलग्न या विलीन करना, उनका संचालन करना, उनसे आर्थिक एवं अन्य सभी प्रकार की सहायता लेना तथा देना और आवश्यकता पड़ने पर सर्वसम्मत निर्णय से उनमें संलग्न या विलीन होना।

(३) छात्र-छात्राओं के लिये शिक्षण, प्रशिक्षण, पुस्तकालय, व्यायामशाला, प्रयोगशाला तथा चिकित्सालय आदि की व्यवस्था करना।

(४) भारतीय राष्ट्र-जीवन के प्रति श्रद्धा, सामाजिक तथा सहयोगात्मक भावों का निर्माण एवं प्रसार करना तथा ऐसे साहित्य का प्रकाशन करवाना।

(५) जीवन में आशा, विश्वास आदि मानवीय गुणों के विकास के लिये समयानुकूल कार्यक्रमों का निर्धारण करना।

(६) साधन सम्पन्न जन, छात्र व छात्राओं से आर्थिक सहायता व शुल्क लेना, जिन साधनहीनों को उचित समझें निःशुल्क शिक्षा देना तथा आय की स्थिति सन्तोषजनक होने पर साधनहीन मेधावी छात्र, छात्राओं को छात्रवृत्ति देना।

(७) उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चल व अचल सम्पत्ति, उपहार, क्रय, गिरवी, विनिमय पट्टे आदि के द्वारा प्राप्त करना तथा आवश्यकता पड़ने पर संस्था के हित में सर्वसम्मत निर्णय से किसी सम्पत्ति का विक्रय करना, गिरवी रखना, विनिमय या पट्टे आदि पर देना।

(८) उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समितियों, उप-समितियों की स्थापना, व्यवस्था तथा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना।

(९) साधारणतया वे सभी कार्य करना जो उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक हों।

संख्या ३२६१/१६-१०-८६

( सील )

# सोसाइटी के नवीकरण का प्रमाण-पत्र

नवीकरण संख्या ५७, १९८६

फाइल संख्या I - ४१५७२

एतद्द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि श्रीनन्दलाल बाजोरिया शिक्षा निकेतन पता—बी० १/१९२ अस्सी, वाराणसी को दिये गये रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र संख्या ३३७२/१९७७–७८ दिनांक १६-२-७८ को दिनांक १६-२-१९८६ से पाँच वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया गया है।

५०) रुपये की नवीकरण फीस सम्यक् रूप से प्राप्त हो गयी है।

दिनांक २३-९-८६

ह० अस्पष्ट<br>
सोसाइटी के रजिस्ट्रार<br>
उत्तर-प्रदेश

# संस्था की प्रबन्ध-समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य

| क्रम सं० | नाम | पद | पता |
|---|---|---|---|
| १. | श्रीमती वीणाजी बाजोरिया | अध्यक्ष | २४/२ अलीपुर मार्ग, कलकत्ता-२७ |
| २. | पण्डित श्रीसूर्यमलजी माठोलिया | उपाध्यक्ष | बी. २७/९२ जवाहरनगर कालोनी, वाराणसी |
| ३. | श्रीबद्रीप्रसादजी तिवारी (वकील) | ,, | बी. २/४६ भदैनी, वाराणसी |
| ४. | श्रीराधेश्यामजी शर्मा | मंत्री | मानसनगर कालोनी (दुर्गाकुण्ड), वाराणसी |
| ५. | श्रीनागरप्रसादजी शर्मा (दाधीच) | स० मंत्री | बी. १/१८१ अस्सी, वाराणसी |
| ६. | श्रीगोपालचन्द्रजी उपाध्याय | कोषाध्यक्ष | बी. २७/१२ दुर्गाकुण्ड, वाराणसी |
| ७. | श्रीमतीगायत्रीदेवीजी बाजोरिया | सदस्य | बी. २७/८२ दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी |
| ८. | श्रीदेवीप्रसादजी बाजोरिया | ,, | २४/२ अलीपुर मार्ग, कलकत्ता-२७ |
| ९. | डा० ठाकुरप्रसादजी वर्मा | ,, | बी. १/३ विजयगढ़ कोठी, अस्सी, वाराणसी |
| १०. | श्रीनारायणप्रसादजी मिश्र | ,, | पंचमन्दिर, अस्सी, वाराणसी |
| ११. | कु० दिनेशनन्दिनीजी परिहार | ,, | बी. २७/१२ दुर्गाकुण्ड, वाराणसी |
| १२. | श्रीमती शिवकुमारीजी वर्मा (पदेन) (मुख्याध्यापिका) | ,, | बी. १/३ विजयगढ़ कोठी, अस्सी, वाराणसी |

# अध्यापक-अध्यापिकाओं एवं कर्मचारियों का विवरण

## जूनियर हाई स्कूल अनुभाग

| क्रम सं० | नाम | योग्यता | पद | वेतन |
|---|---|---|---|---|
| १. | श्रीमती शिवकुमारी वर्मा | एम. ए., बी. एड. | प्रधानाध्यापिका | ६६५) |
| २. | श्रीमती आशा पाण्डेय | एम. ए., बी. एड. | स० अध्यापिका | ५००) |
| ३. | श्रीमती गायत्री मिश्रा | एम. ए., बी. एड. | ,, | ५००) |
| ४. | श्रीमती पुष्पा सिंह | एम. ए., बी. एड. | ,, | ५००) |
| ५. | श्रीमती मीरा पाण्डेय | एम. ए., बी. एड. | ,, | ५००) |
| ६. | श्रीसच्चिदानन्द | आई. एस. सी., बी. ए. | अध्यापक विज्ञान | ३६०) |
| ७. | श्री शरद कुमार शुक्ल | इण्टर | लिपिक | ४०५) |
| ८. | श्रीमती पार्वती देवी | | परिचारिका | २२०) |
| ९. | श्रीमती लक्ष्मी देवी | | ,, | २००) |

## शिशु एवं प्राइमरी अनुभाग

| क्रम सं० | नाम | योग्यता | पद | वेतन |
|---|---|---|---|---|
| १. | श्रीमती सुशीला मिश्रा | एम. ए., बी. एड. | स० अध्यापिका | ४१०) |
| २. | श्रीमती शकुन्तला शर्मा | मैट्रिक | ,, | ५००) |
| ३. | श्रीमती शेफाली नाथ | आई. ए. | ,, | ५००) |
| ४. | कुमारी गीता गुप्ता | बी. ए. | ,, | ३६०) |
| ५. | श्रीमती सुनीता सिंह | बी. ए. | ,, | ३६०) |
| ६. | श्रीमती अरुणा त्रिपाठी | एम. ए., बी. एड. | ,, | ३६०) |

# विगत वर्षों में निकेतन की छात्र संख्या के आँकड़े

## कक्षानुसार छात्र विवरण

| कक्षा | ८१–८२ | ८२–८३ | ८३–८४ | ८४–८५ | ८५–८६ | ८६–८७ | ८७–८८ | ८८-८९ | ८९–९० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शिशु | ९० | ८० | ६६ | ६५ | ८३ | ९० | ७२ | ६७ | ८० |
| १ | ६३ | ४३ | ४२ | ३८ | २९ | ४० | ४२ | ३९ | ३५ |
| २ | ४७ | ४९ | ३९ | ४१ | ३९ | ३६ | ३५ | ४१ | ३८ |
| ३ | ४३ | ४६ | ४० | ४० | ३८ | ३० | ३० | ३२ | ३८ |
| ४ | ४९ | ४५ | ४५ | ३५ | ४१ | ३३ | २९ | ३७ | ३० |
| ५ | ३३ | ४४ | ३४ | ४० | ३७ | ३६ | ३६ | ३४ | ३६ |
| ६ | ३२ | २४ | ४१ | ४२ | ३४ | ३९ | ४० | ३७ | २५ |
| ७ | २९ | २० | १८ | ३१ | ३३ | २३ | ३४ | ४० | २८ |
| ८ | १८ | २० | १९ | १८ | २७ | ३३ | २३ | ३२ | ३५ |
| कुलयोग | ४०४ | ३७१ | ३४४ | ३५० | ३७१ | ३६० | ३४१ | ३५९ | ३४५ |

लो श्रद्धाञ्जलि हे महापुरुष
शत कोटि हृदय के कंज खिले हैं।
आज तुम्हारी पूजा करने
गंग जमुन एक साथ मिले हैं॥

## हमारे प्रेरणा-स्रोत

पं० गणपतिजी शर्मा

जिन्हें

क्रूर काल ने ३१ अक्टूबर १९८८ को

हमसे छीन लिया

WITH BEST COMPLIMENTS OF
BAJORIA
CHARITABLE
TRUST
"McLEOD HOUSE"
3, Netaji Subhas Road
CALCUTTA-1

—सुशीला मिश्रा (एम० ए०, बी० एड०) अध्यापिका

अकबर ने बीरबल से पूछा, "बीरबल! क्या तुम यह बता सकते हो कि भारतवर्ष में सबसे अच्छा जल कहाँ का होता है ?"

"जहाँपनाह ! यह प्रश्न तो बहुत ही साधारण सा है। सारा देश जानता है कि यमुना का जल अपने देश का सर्वोत्तम जल है।" बीरबल ने अकबर के प्रश्न को जैसे हवा में उड़ाते हुए उत्तर दिया।

अकबर फिर बोला, 'बीरबल ! मैं समझ गया कि तुम चापलूस हो और मुझे खुश करने के लिए गलत-सलत उत्तर दिया करते हो। तुमने यह समझा होगा कि यमुना के तट पर ही हम रहते हैं, इसलिए झट कह दिया कि यमुना का जल सर्वोत्तम होता है। किन्तु अन्य मंत्रियों का मत है कि गंगाजी का जल अपना शानी नहीं रखता। क्या उन सब का विचार गलत है ?"

बीरबल मुस्कराता हुआ बोला, "जहाँपनाह ! आपको तो मैं क्या कहूँ, लेकिन यह निर्विवाद है कि जिन लोगों ने गंगाजी के जल को सर्वोत्तम कहा वे सबके सब मंद बुद्धि वाले हैं। सच पूछिए सरकार तो गंगाजी में जल नहीं बह रहा है वह तो अमृत की धारा है। उसे जल कहना गंगाजी की तौहीन करना होगा।"

सच है यह अमृत की धारा है न कि जल की। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

ऐ मन लोचन खोलि लखो,
वसुधा में सुधा रस जात बहा है।

यह सुधा धार जब से तपस्वी महाराज भगीरथ द्वारा धरा पर लायी गयी तब से निरन्तर बहती चली जा रही है। भारतवर्ष का और भारतवासियों का सौभाग्य है कि इस देश में गंगा बहती है। जिनके दर्शन मात्र से ही सारे पाप दूर हो जाते हैं, स्नान करने के अपार फल का वर्णन तो किया ही नहीं जा सकता।

दरसन ते अघ जाइ,
मज्जन किये अनेक फल।

गंगा मइया ने जब से इस देश पर कृपा की तब से लेकर आज तक कवियों द्वारा उनकी महिमा का गुणगान हो रहा है। एक ओर गंगा की धारा बह रही है तो दूसरी ओर उसी के समानान्तर काव्य की धारा भी प्रवाहित हो रही है। यहाँ कुछ कवियों के चुने हुए छन्द प्रस्तुत हैं :—

कविवर पद्माकर अपने द्वारा किये गये पापों को ललकारते हुए कहते हैं:—

जैसे तैं न मोसो कहूँ नेकहू डरात हुतो
तैसे अब हौं हू तो सों नेक हू न डरिहौं।
कहै 'पद्माकर' प्रचण्ड जो परैगो तो,
उमाड़ि कर तोसों भुजदण्ड ठोंकि लड़िहौं।
चलो चलु चलो चलु बिचलु न बीच ही तें,
कीच बीच नीच तो कुटुम्ब को कचरिहौं।
ऐरे दगादार मेरे पातक अपार,
तोहि गंगा की कछार में पछारि छार करिहौं।

यमराज को एक बार बड़ी चिन्ता हुई। वे जिस पापी को नरक में भेजने का निर्णय करते थे वह गंगाजी का नाम लेकर या उनमें स्नान करने मात्र से स्वर्ग का अधिकारी बन बैठता था। लाचार होकर यमराज ब्रह्मा के पास पहुँचे। इस सन्दर्भमें 'रत्नाकर' का यह छन्द देखें :—

पापिन की मण्डली लुकाये देति जाने कहाँ,
धाये तिहूँ लोक पै न पावति पतीजिए।
कहै रत्नाकर विधाता सों पुकारै जम,
खाता खीस होत सबै भारी दुख छीजिए।
पूछै उठे गाजि तापै हँसत समाज सबै,
लाजनि कहाँ लगि लहू की घूँट पीजिए।
कीतो कैद कीजिए कमंडलु में गंगा फेरि,
की तौ यह साहिबी हमारी फेरि लीजिए।

यमराज का ब्रह्माजी से यह कहना उचित ही है कि हे महाराज! या तो आप पतित पावनी गंगाजी को फिर से अपने कमंडलु में कैद कर लीजिए या मेरा त्यागपत्र ले लीजिए। दोनों एक साथ नहीं चलेगा।

आधुनिक कवियों ने भी गंगाजी की महिमा में अनेक रचनाएँ की हैं। भारत की आस्तिक जनता जब गंगा स्नान करती है तो अपनी अंजलि से गंगाजी को जल चढ़ाती है। यह परम्परा महाराज भगीरथ द्वारा चलायी गई। उन्होंने अपने साठ हजार पुरखों को तारने के लिए जलांजलि दी थी। तब से यह क्रम निरन्तर जारी है, ठीक गंगाजी के प्रवाह की भाँति। हम सब यह करते हैं। क्या किसी ने कभी सोचा कि गंगाजी को गंगाजल क्यों दिया जाता है? कवि प्रवर पंडित चन्द्रशेखर मिश्र की इस सन्दर्भ में एक उक्ति है। उक्ति भी इतनी सुन्दर कि उसे नकारा नहीं जा सकता। वे लिखते हैं :—

एक अनहोनी देखी हीरे को तरल कर,
तपसी भगीरथ ने भूमि में गिरा दिया।
विष्णु चरणोदक है महिमा अपार जान,
शिव हुए नीचे जल शीश पै खड़ा किया।
और सब जल किन्तु यह है अमृत धार,
ऋषि-मुनि कह गये ग्रन्थ में पढ़ा किया।
इससे पवित्र भेंट कुछ न मिली हमें तो,
गंगा से ही जल लिया गंगा को चढ़ा दिया।

गंगावतरण की अद्भुत कथा को लेकर कवियों ने आनन्दवादी छन्दों की भी खूब रचनाएँ की हैं। यह बात तो सत्य है कि महाराज भगीरथ तपस्या करके गंगाजी को स्वर्ग से धरती पर उतारने में सफल हुए। लेकिन जहाँ यह सत्य है वहीं एक सचाई यह भी है कि उनके धरती पर आने का एक कारण पार्वती और गंगाजी के बीच उत्पन्न सवतिया डाह भी है। इस सन्दर्भ में विकल गोंडवी का यह छन्द देखें—

संकर के सिर पै रहतीं
नहवउतीं धोवउतीं जटा सुरझउतीं।
संग घुमक्कड़ के घुमतीं
नचतीं गउतीं नित मौज उड़उतीं।
संकर काँ जुड़वउतीं जरूर
मुला जिउ पारबती क जरउतीं।
पारवती जौ न मारि भगउतीं—
त गंगा कबौं धरती पै न अउतीं।

सुकवि पारस भ्रमर गंगाजी को एक ऐसी ग्वालिनि के रूप में देखते हैं जो संगम में गंगा-यमुना के श्वेत-नील धारा के मिलाप का दर्शन करते हुए इस छन्द के मर्म में जायें तभी आनन्द आयेगा :—

पाथर तोरि पहार ढहावत नाचत गावत
आवत गंगा।
संभु के सीस जटान के ऊपर नृत्य को मंच
बनावत गंगा।
गाँव, गली, गलियारन, द्वारन ग्वालिनि रूप
बनावत गंगा।
दूध में पानी मिलावत हैं सब,
पानी में दूध मिलावत गंगा।

हम सब बड़े भाग्यशाली हैं जो गंगा तट पर निवास करते हैं :—

भागीरथी हम दोष भरे
पै भरोस यही हैं परोस तुम्हारे।

हमारा देश धन्य है जिसे गंगाजी जैसी पावन नदी प्राप्त हुई है। इसके तट पर वेदों की ऋचाएँ रची गई हैं, तपस्याएँ हुई हैं, यज्ञ हुए हैं, तीर्थ स्नान हुए

हैं, प्रवचन हुए हैं और कितने ही पावन संकल्प लिये गये हैं। गंगा जी पर जितना भी लिखा जाय कम ही होगा और कोई लिखेगा भी क्या ? जब तक इधर आप उनके द्वारा किसी एक तारे गये की कथा लिखेंगे तब तक वे पता नहीं कितनों का उद्धार कर देंगी। उनका यह क्रम निरन्तर चल रहा है। कभी भी समाप्त होनेवाला नहीं है।

जौं लौं एक तारे की हौं रचत कवित्त गंगे,
तौ लौं तुम केतिक करोर तार डालती।

कैसा है यह देश और कैसी हैं गंगा मइया। अन्त में इसी पर काशी वासी कवि जगदीशचन्द्र मिश्र का एक छन्द पढ़कर गंगाजी को प्रणाम करें:—

गोमुख सागर एक किये,
युग-काल से जूझ रही यह गंगा।
धार सुधा की लुटाती चली है,
पहेली अबूझ रही यह गंगा।
संस्कृति से अनजान उन्हें ही,
नदी सम सूझ रही यह गंगा।
यज्ञ के मंडप से इस देश में,
शख सी गूंज रही यह गंगा।
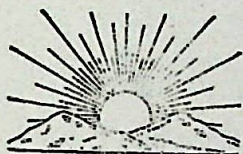
# पेड़से भी गया बीता !

एकबार महाराजा रणजीतसिंह शिकार खेलनेके लिए निकले। वे एक जगह विश्राम कर रहे थे। परन्तु यह क्या ? एक ढेला आकर उनके माथेसे लगा। खून बहने लगा। थोड़ी ही देरमें उनके मुसाहिब लोग एक बुढ़ियाको पकड़ लाये। बुढ़िया डरसे काँपती हुई बोली, महाराज ! क्षमा करें। अनजानेमें ढेला आपको जा लगा। मेरा पोता भूखा था और रो रहा था। मैंने पका बेल देखकर ढेला फेंका। उससे बेल गिर जाता और उसे पाकर चुप हो जाता। मुझे मालूम न था कि आप यहीं विश्राम कर रहे हैं। मुझे छोड़ दें। राजा कुछ पल चुप रहे और फिर बुढ़ियाको १००० रु० तथा खाने-पीनेका बहुत-सा सामान देकर विदा किया। दरबारियोंने पूछा यह क्या अचरज है ? दोषी बुढ़िया को दण्ड नहीं इनाम दिया ? महाराज बोले—यदि एक जड़ पेड़, जो कि बुद्धिहीन है, ढेला लगने पर बेल दे सकता है तो क्या मैं चेतन-प्राणी, बुद्धिमान् राजा इतना भी नहीं कर सकता ? क्या मेरा स्वरूप पेड़से भी गया बीता है ?
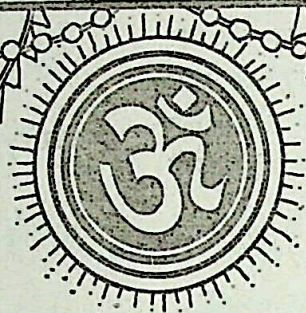
ॐ
शुभकामनाओं सहित
बिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ
आचार्य श्रीभालचन्द्र पाण्डेय
झिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ
हरि के भजन सदा मैं गाऊँ
तोता विप्र चरण नित ध्याऊँ
हँस वंश गुरु बलि बलि जाऊँ
बिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ
वन्दौ जीव जानि प्रभु रूपा
अमिस अहार न हाथ लगाऊँ
श्रीगणेश वाहन पद परसूँ
तिनकी शरण सदा मैं जाऊँ
बिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ
हरि की कृपा परमप्रिय मोको
सत संगत हरसाऊँ
जगत खिलौना करि मैं जानू
ईश्वर भक्ति नहाऊँ
बिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ
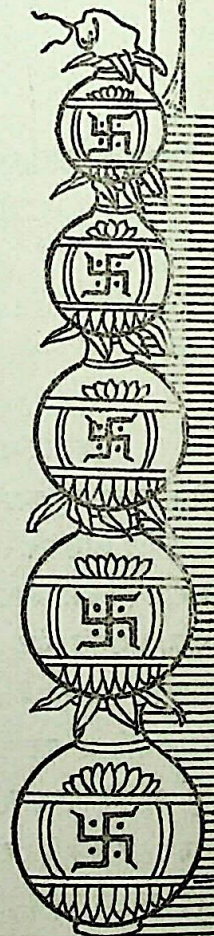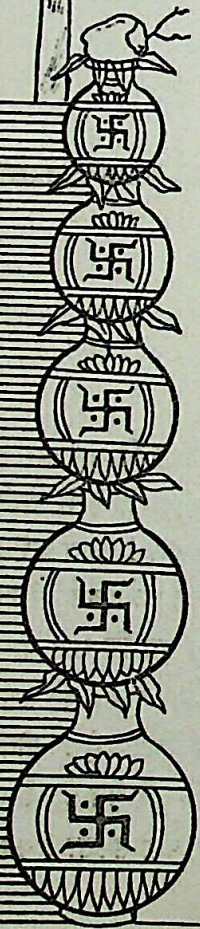
# प्रायश्चित

—एस० मोहन

चीख सुनते ही कक्षा के छात्र और शिक्षक बाहर निकल आये। कक्षा के बाहर स्कूल के अहाते में पड़ा अमित दर्द से कराह रहा था। उसके सिर से रक्त बह रहा था। शिक्षक ने छात्रों को तुरन्त रिक्शा लाने को कहा तो दो छात्र दौड़कर सड़क की तरफ चले गये।

कैसे गिर पड़े अमित ? शिक्षक ने अमित का कंधा सहलाते हुए पूछा।

'छत से गिर पड़ा सर।'

छत से ? कैसे ? उन्होंने हैरान होते हुए पूछा।

जी ···· ···· पतंग पकड़ने ···· ···· कहते ही वह बेहोश हो गया।

कुछ ही देर में रिक्शा आ गया और अमित को हस्पताल ले जाया गया जहाँ डाक्टरों ने देख कर कहा कि अमित को रक्त की सख्त आवश्यकता है।

'डा० साहब आप रक्त का प्रबन्ध करें, मैं अमित के माता-पिता को बुला कर लाता हूँ।' शिक्षक जैसे ही मुड़े कि अमित के माता-पिता आ गये। डा० साहब ने बताया कि हस्पताल में खून का प्रबन्ध नहीं है। अमित के माता-पिता खून की खोज में निकले लेकिन खून उपलब्ध नहीं हो सका। तभी शिक्षक ने देखा कि कक्षा का सबसे शरारती लड़का शैम्पी दौड़ता हुआ आया और बताया कि हमारा और अमित का खून एकही ग्रुप का है, पिछले माह हम लोगों ने ब्लड ग्रुप चेक करवाया था।

तभी अमित के पापा ने शैम्पी से पूछा—बेटे तुम्हारे पापा कहाँ हैं ? तुम उनसे पूछ कर आये हो ?

मैंने डैडी को खबर करवा दी है अंकल। आप अमित को बचा लें ? मेरा जितना भी रक्त चाहिए······ हाँ-हाँ जल्दी कीजिए डाक्टर साहब। शैम्पी का ब्लड ग्रुप अमित के ब्लड ग्रुप से मिलता है। यह स्वर शैम्पी के पापा का था।

डाक्टरों ने तुरन्त खून चढ़ाना शुरू कर दिया और उसका आपरेशन किया जो सफल रहा।

अमित के स्वस्थ होने पर उसके पापा-मम्मी ने बताया कि शैम्पी ने अपना खून देकर तुम्हें जीवन-दान दिया है। अमित की मम्मी की आँखों में आंसू आ गये।

अमित को विश्वास नहीं हो रहा था कि शैम्पी जैसा शैतान लड़का ऐसा पुनीत कार्य भी कर सकता है। उसे यकीन ही नहीं हो रहा था। तभी शैम्पी दौड़कर अमित से लिपट गया—क्षमा कर दो अमित ···· मैंने तुम्हें छत से धक्का ···· ···· अमित बोला ···· छी-छी ···· कैसी बातें करते हो ? मैं तो छत से खुद ही ···· बाकी के शब्द उसके गले में थमकर रह गये।

दोनों के मम्मी डैडी भी प्रसन्नता से गद्-गद् होकर उन दोनों को स्नेह भरी निगाहों से निहार रहे थे।

संकलनकर्ता—निशान्त सिंह, कक्षा ५

# पीछे-आगे

–जय शंकर बाजपेयी

★

नाच रहा है भालू छम्-छम्,
गधा बजाता ढोल ।
सुनने बैठी आज लोमड़ी,
खुल जायेगी पोल ।।

तीसमार खाँ बनते दोनों,
बहुत दिनों से आये ।
वाह–वाह सारे जंगल में,
गायक – वादक छाये ।।

ताल बजानी थी गजझम्पा,
था गाना दरबारी !
जमकर हुई भिड़न्त, किसी ने,
हिम्मत तनिक न हारी ।।

थक कर चूर हुये दोनों फिर,
बेसुध होकर जागे ।
दोनों निकले बड़े रियाजी,
पीछे कोई न आगे ।।

# वाणी से नौकर मंत्री राजा की परख
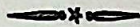
वन-विहार के लिये आये हुए राजा का जहाँ पड़ाव था, उसी के पास एक कुएँ पर एक अन्धा यात्रियों को कुएँ से निकाल कर जल पिलाया करता था। राजा को प्यास लगी, उसने सिपाही को पानी लाने भेजा। सिपाही वहाँ जाकर बोला—'ओ अन्धे एक लोटा जल इधर दे।'

सूरदास-ने कहा—'जा भाग तुझ जैसे मूर्ख नौकर को पानी नहीं देता।' सिपाही खीझ कर वापिस लौट गया। अब प्रधान सेनापति स्वयं वहां पहुँचे और कहा अन्धे भाई एक लोटा जल शीघ्रता से दे दो। अन्धे ने उत्तर दिया—''कपटी मीठा बोलता है लगता है पहले वाले का सरदार है। मेरे पास तेरे लिए पानी नहीं।' दोनों ने राजा से शिकायत की, महाराज! वुड्ढा पानी नहीं देता। राजा उन दोनों को लेकर स्वयं वहाँ पहुँचा और नमस्कार कर कहा— 'बाबाजी! प्यास से गला सूख रहा है, थोड़ा जल दें, तो प्यास बुझायें।' अन्धे ने कहा—'महाराज! बैठिये अभी जल पिलाता हूँ।

राजा ने पूछा—'महात्मन्! आपने चक्षुहीन होकर भी यह कैसे जाना कि एक नौकर, और दूसरा सरदार और मैं राजा हूँ। वुड्ढे ने हंसकर कहा—व्यक्ति की वाणी से उसके व्यक्तित्व का पता लग जाता है।

अशुभ तथा अनियंत्रित वाणी बोलने वालों को सामाजिक तिरस्कार का भाजन बनना पड़ता है।

प्रज्ञा पुराण पृष्ठ—१३९
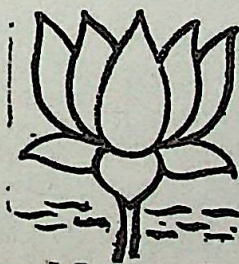
संकलनकर्ता—आशुतोष कुमार द्विवेदी, कक्षा ७

# आज और कल के पिता

—अकेला भाई

जब मुझे होश आया तो देखा कि मैं अस्पताल में हूँ। मुझे किस प्रकार और कौन यहाँ लाया यह तो स्मरण नहीं था पर मुझे इतना अवश्य याद आने लगा था कि नित्य की भाँति उस दिन भी छुट्टी होने के बाद मैं अपनी साइकिल से घर की ओर जा रहा था। बीच रास्ते में मुझे तीन आदमियों ने घेर लिया और बिना किसी वार्तालाप के मुझ पर टूट पड़े, इसके बाद क्या हुआ मुझे कुछ स्मरण नहीं था।

'वे लोग कौन थे ?'' यही प्रश्न मैं पूछने वाला था कि मुझसे ही एक पुलिस वर्दीधारी पूछ बैठा।

"मुझे नहीं मालूम" !

"क्या आप उन्हें दोबारा देखने पर पहचान सकते हैं ?"

"नहीं।"

"क्यों नहीं।"

'इसलिए कि मैं उन्हें अच्छी तरह देख ही नहीं पाया था।"

कुछ और जानकारियाँ प्राप्त करने के बाद वे चले गये।

तीन दिनों के बाद मेरे रूम में एक नवीं कक्षा का छात्र आया। अपनी आँखों में आँसू भर कर बोला—"सर ! मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं नहीं जानता था कि बात इतनी बढ़ जायेगी, वरना मैं पिता जी को बताता ही नहीं। उस दिन "होम वर्क" न करने के कारण आपने मुझे दण्ड दिया था, यह बात मैंने पिताजी को बताई तो उन्होंने आपको बहुत गालियाँ दीं और कुछ गुण्डों को भेज कर आपको पिटवा दिया। मैं यह जानता तो उन्हें न बताता। आप मुझे क्षमा कर दीजिए सर।" उसने मेरा पैर पकड़ लिया था।

"ओ! तो यह बात है। खैर तुमने यह बात बताकर मेरे ऊपर एक एहसान ही किया, वरना कोई निर्दोष व्यक्ति भी इस घटना में फंस सकता था। अब तुम जाओ, मैंने तुम्हें क्षमा किया।" अफसोस हुआ उसके बाप की बुद्धि पर। मुझे पिटवाने के लिए उन्हें गुण्डों को रुपये देने पड़े थे और बाद में यह भी पता चला कि इस मामले में फंस जाने से बचने के लिए उन्हें पुलिस और डाक्टरों पर भी रुपये खर्च करने पड़े थे। मैं इस घटना को भूलने जा रहा था कि कुछ इसी प्रकार की मेरे साथ घटी घटना का स्मरण हो आया।

उन दिनों मैं आठवीं कक्षा का छात्र था। क्षेत्रमिति मेरे लिए नया विषय था और उसमें मेरी रुचि भी नहीं थी। गर्मी की छुट्टी के लिए प्रत्येक विषय में 'होमवर्क' दिये गये थे। छुट्टी के बाद जब मैं स्कूल पहुँचा तो क्षेत्रमिति का 'होमवर्क' नहीं करने के कारण शिक्षक महोदय ने बेंत की छड़ी से मेरी पिटाई कर दी और फिर 'क्लास रूम' के बाहर गेट पर खड़ा कराकर मेरे सिरपर चार इटें लाद दी गयी थीं, दोपहर तक के लिए। शामको घर पहुँचा तो बुखार आ गया था। मैंने सारी बातें पिताजी को बता दीं। पिताजीने आग बबूला होकर तड़ातड़ तीन चार चपत लगाये और उस दिन का मेरा खाना बन्द करवा दिया। तब मेरी माँ ने पिताजी की अनुपस्थितिमें मुझे खाना खिलाकर चुपके से मेरा रूम बन्द कर दिया था।

मैं माथे पर हाथ रखकर सोचने लगा कि आज और कल के 'पिताजी' अपनी सन्तानसे कैसी हमदर्दी रखते रहे हैं ?

संकलनकर्ता—कमलेश रैकवार, कक्षा-५

# अमर शहीद चन्द्रशेखर 'आजाद'

—श्री ज्ञानदेव रामचन्द्र चौधरी

अनेक क्रान्तिकारियों में अग्रणी आत्म बलिदानियों में वीर चन्द्रशेखर आजाद का नाम आता है। जो "मैं आजाद ही रहूँगा" की प्रतिज्ञा को पूरा करके देश के हजारों नवजवानों के लिए मशाल बन गये।

जब वे ११ वर्ष के थे तभी अमृतसर में जलियान वाला बाग का भयंकर हत्याकाण्ड हुआ, जिसमें अंग्रेज़ों ने एक शान्तिपूर्ण सभा करने वाले हजारों निरपराध भारतीयों को मार डाला अथवा घायल कर दिया था। इस नृशंसता से सारा देश विशेषकर नवयुवक वर्ग मर्माहित हो उठा।

बालक आजाद पर भी इसकी व्यापक प्रतिक्रिया हुई और वह अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध चल रहे जन-आन्दोलन में कूद पड़े। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और १५ बेंत लगाने की सजा हुई लेकिन वीर बालक चन्द्रशेखर इससे विचलित नहीं हुए। उन्होंने हर बेंत के साथ 'भारत माताकी जय' का उद्घोष करते हुए यह कठिन यातना झेल ली और प्रतिज्ञा कर ली कि "ब्रिटिश सरकार उन्हें दुबारा पकड़ नहीं सकेगी, वे आजाद हैं और आजाद ही मरेंगे।"

इसी बीच देश के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्तिकारियों के दल संगठित हो रहे थे। आजाद ने उन्हें एक सूत्र में बांधने में अगुवाई की और एक बड़ा संगठन बनाकर आजाद ने संभाला। अंग्रेज सरकार सन्नाटे में आ गयी और 'साइमन कमीशन' को भारत भेजकर देशवासियों को गुमराह करने की कोशिश की, किन्तु इसे देश ने स्वीकार नहीं किया। सारा देश 'साइमन वापस जाओ' के नारों से गूंज उठा। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय पुलिस की लाठियों के शिकार हो गये।

इस घटना ने आग में घी का काम किया। क्रान्तिकारियों ने भी राष्ट्रीय पैमाने पर अपनी कार्यवाहियाँ तेज कर दीं। ब्रिटिश सरकार चन्द्र-शेखर आजाद को पकड़ना चाहती थी किन्तु वे उसके हाथ नहीं लगे।

और फिर २ फरवरी १९३१ का वह अभागा दिन आया जब कि उनके ही एक गद्दार साथी की सुरागरसी के फलस्वरूप वे एल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में घिर गये। उन्होंने अपनी पिस्तौल से अकेले ही पुलिस का मुकाबिला किया और आजाद रहने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए आखिरी गोली अपनी कनपटी में मार ली। वे भारत की आजादी के लिए शहीद हो गये।

संकलनकर्ता :मनीषकुमार शर्मा, कक्षा-६

—:०:—

# जीवन की मुस्कान

—राजेन्द्र कृष्ण श्रीवास्तव

मनके सुखकी खान हैं बच्चे
देश जाति की शान हैं बच्चे
सत्य कहूँ लिख कागज कोरे
बाल रूप भगवान हैं बच्चे !
जीवन की मुस्कान हैं बच्चे !

प्यारे बच्चे जब हँसते हैं
पतझड़ भी लगती मन भावन
बच्चे जब किलकारी करते
मुखरित होता है घर आंगन
खुशियों के अरमान हैं बच्चे !

बोली में लगते ये कोयल
फूलों जैसे होते कोमल
इनके संग सुखद हो जाता
मानव जीवन का हर क्षण पल
मानवता की शान हैं बच्चे !

रोटी, कपड़ा, स्वास्थ्य, सुशिक्षा
जन्म सिद्ध अधिकार है इनका
ऊँच नीच का भेद न मानें
सबके प्रति सम प्यार है इनका
जननी के जय-गान हैं बच्चे !

संकलनकर्ता—अतिन मेहरा, कक्षा-५

# हमारा मोह किससे ?
## लक्ष्मी या परमात्मा से

—पुष्पासिंह ( एम० ए०, बी० एड० ) अध्यापिका

लक्ष्मी किसी गुणवान व्यक्ति के द्वारा बड़े यत्न से भी उपार्जित होने पर भी प्रायः उसके उपयोग में नहीं आतीं। वह गुण-अवगुण का विचार किये विना ही जिस किसी का भी अवलम्बन कर लेती हैं। प्रायः जड़ व्यक्ति ही इसके आश्रय हैं। धन सम्पत्ति सुख देने के लिए नहीं बल्कि दुःख देने के लिए ही बढ़ती है। जैसे विष की बेल यदि सुरक्षित रखी जाय तो वह मौत ही देती है, वैसे ही धन सम्पत्ति की रक्षा करने पर वह विनाश का ही कारण होती है।

जिस प्रकार जाल में फँसा हुआ पक्षी अपने घोंसले में जाने की शक्ति से वंचित हो दुःख-शोक में डूब जाता है, उसी प्रकार लोग धन रूपी तृष्णा के जाल में फंस कर अपने परम स्वरूप को प्राप्त करने में असमर्थ हो मोह में डूबे रहते हैं। जैसे बालक नवीन खिलौने की ओर लपकता है और फिर उसे पाकर कुछ ही समय में उससे विरत हो जाता है वैसे ही यह मन प्राप्त हुए विषयों से शीघ्र ही विरत हो नये विषयों को ढूँढ़ने लगता है।

समस्त प्रपंचों का कारण मन ही है। जीव की आयु पत्ते की नोंक पर लटकते जल बिन्दु के समान है वह कभी भी छोड़कर चल देनेवाली है। यों तो वृक्ष भी जीते हैं, पशु व पक्षी भी जीते हैं किन्तु उसी पुरुष का जीवन सफल है जो परमात्मा के ज्ञान को प्राप्त कर फिर मृत्युलोक में जन्म नहीं लेता है।

## दुर्लभ मनुष्य

संसार में तीन प्रकार के पुरुष दुर्लभ हैं—

१—शूरवीर होकर भी अपने ही मुँह से अपनी प्रशंसा न करता हो।

२—स्वामी होकर भी अपने प्रजाजनों पर समान दृष्टि रखता हो।

३—जो धन सम्पत्तियुक्त होकर भी निन्दा का पात्र न हो।

गणेश शर्मा, कक्षा-८

बहुत पहले की बात है। एक गाँव में हरिराम नाम का किसान रहता था। उसके दो बेटे थे—मुरारी और श्याम। किसान वृद्ध हो चला था मगर उसे चिन्ता नहीं थी। उसे भरोसा था कि उसके लड़के अपना गुजारा कर सकते हैं। कुछ दिनों बाद किसान परलोक सिधार गया। किसान का बड़ा लड़का श्याम खेतों में निपुण था और मुरारी पढ़ने में। श्याम ने अपने खेत संभाले और मुरारी को गुरु के आश्रम में पढ़ने के लिये भेज दिया। मुरारी पढ़न में दिल लगाया तो आश्रम के छात्र मुरारी की विद्या का लोहा मानने लगे। गुरुजी आश्रम में मुरारी को सबसे अधिक प्यार करते थे, सबके सामने उसका बड़ाई करते थे। इससे मुरारी अपने में गौरव अनुभव करने लगा। कुछ समय बाद आश्रम में सरयू नाम का एक विद्यार्थी आया जो पढ़ने-लिखने तथा व्यवहार में कुशल था। धीरे-धीरे मुरारी उससे ईर्ष्या करने लगा। एक दिन गुरुजी जंगल में मुरारी, सरयू तथा अन्य विद्यार्थियों के साथ घूमने गये, वहाँ सभी विद्यार्थी अपना मनोरंजन करने लगे। सरयू एक पेड़ की छाया में सो गया तो मुरारी ने सोचा कि यदि मैं सरयू की हत्या कर दूँ तो आश्रम में मेरा मान बढ़ जायेगा। यह सोचकर उसने सरयू को मारने के लिये चाकू निकाला मगर गुरुजी ने देख लिया। यह देखकर मुरारी उस समय वहाँ से भाग निकला।

कुछ समय बाद मुरारी फिर आश्रम में आ गया, उसे देख कर गुरुजी आग बबूला हो उठे। गुरुजी के इस उग्र रूप को देखकर मुरारी नतमस्तक हो बड़े प्यार से बोला—गुरुजी मैं सच्चाई जान गया हूँ जो अधिक चतुर बनता है उसे दूसरे के प्रति ईर्ष्या पैदा हो जाती है। अगर यह ईर्ष्या लगन की भावना में बदल जाय तो हम उन्नति कर सकते हैं। यह सुनकर गुरुजी ने मुरारी को अपने गले से लगा लिया। मुरारी पुनः आश्रम में गुरुजनों, छात्रों तथा पण्डितों का प्रेरणा-पात्र बन गया।

—:०:—

## बाल - चालीसा

नरेश शर्मा, कक्षा-८

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर  
रसगुल्लों से भर दो गागर  
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर  
मम्मी हंसती रोते फादर  
रामदूत अतुलित बलधामा  
पेण्ट फटी गायब पैजामा

महाबीर विक्रम बजरंगी  
दूर करो पैसे की तंगी  
संकट से हनुमान छुड़ावें  
भूखे पेट भजन नित गावें  
राम रसायन तुम्हरे पासा,  
बाबू हों रिश्वत के दासा।

# इतिहास में हाथी

भारत के इतिहास में हाथियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। मुगल साम्राज्य के आरम्भ के दिनों में हाथियों की शक्ति और बुद्धि को लड़ाई में इस्तेमाल करने की परम्परा थी।

२८० वर्ष ईसा पूर्व रोमनों ने एपिरस के पिरस के साथ युद्ध में प्रथम बार हाथियों का सामना किया। मगर वे इनसे पूरी तरह परिचित तब हुए जब द्वितीय प्यूनिक युद्ध में हानीबल ने इटली पर उत्तर से आक्रमण किया। वह अपनी सेना और हाथियों को आल्प्स पर्वत माला के पार सेंट गोथार्ड दर्रे से लाया था।

इस युद्ध का वर्णन ग्रीक इतिहासकार पोलिबियस ने किया है कि कई सौ पशु पर्वत पार करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो गये थे और जब सेना के मध्य इटली में आरनों नामक स्थान पर पहुँची तो केवल कुछ ही हाथी बचे थे। उनमें वह हाथी भी था जिसपर हानीबल स्वयं सवारी कर रहा था।

रोमन सेनापति सिपियो ने इस नये इंजन का सामना करने का तरीका निकाला था। जामाके युद्ध में उसने अपने धनुर्धरों को हाथियों की सूड़ों पर तीर चलाने का आदेश दिया। सूंड़ हाथी का सबसे संवेदनशील भाग है। उनपर तीर चलाने का परिणाम यह हुआ कि हाथी भयभीत होकर वापस मुड़े और उन्होंने अपने ही सेना के पैदल जवानों को रौंद डाला।

वैदिक युग में हाथी को 'राजा बनाने वाला' कहा गया है। यदि सिंहासन के उत्तराधिकारी का अपहरण हो जाता तो राजसी हाथी उसकी खोज करता था। लेकिन यदि इतिहासकारों पर विश्वास किया जाये तो कई राज्य पलटने के कारण भी हाथी ही रहे हैं।

राजा पुरू सेना लेकर जब सिकन्दर का सामना करने आया तो हाथियों के कारण उसकी पराजय हुई। ये भारी भरकम पशु ग्रीक धनुर्धरों के तीरों का आसान निशाना बने। सन् ७१२ ईस्वी में राजा दाहिर भी हाथियों के कारण अरबों से हारा था क्योंकि अरबों ने उसके हाथियों को आसानी से निशाना बना लिया था।

एक हाथी के कारण ही विजय नगर का राज्य ध्वस्त हुआ था। तालीकोटा के युद्ध में एक क्रोधित हाथी ने राजा राम राय की पालकी पर हमला कर दिया। पालकी ढोने वाले राजा की पालकी वहीं छोड़ कर भाग गये। राजा को हुसैन निजाम शाह ने कैद कर लिया और उसका सिर उड़ा दिया।

अकबर महान अपनी सेना में हाथियों का नियमित रिसाला रखता था और इन भारी भरकम पशुओं को मखमल और रेशम से सजाया जाता था।

प्राचीन समय में राजाओं में परम्परा थी कि भेंट स्वरूप एक दूसरे को हाथी दिये जाते थे। राजकुमार खुर्रम ने जब राजा अमर सिंह का स्वागत किया तो उसे भेंट में हाथा दिया था। बादशाह जहाँगीर ने भी जगत सिंह को एक हाथी भेंट में दिया था।

कई वर्ष पहले हमारे स्व० प्रधान मंत्री श्रीजवाहरलाल नेहरू ने भी न्यूयार्क चिड़िया घर को एक शिशु हाथी भेंट किया था।

संकलनकर्ता—नीरज मिश्र, कक्षा-५

## दीवाली

रेनू मिश्रा, कक्षा-८

एक ईश्वर और दुनियां एक है
क्यों नहीं सबकी दीवाली एक जैसी। क्यों०

झालरों से आज कितने घर सजेंगे
आज सरगम इन पटाखों के बजेंगे।

हैं कहीं भूखी कहीं नंगी उम्मीदें
जल रहे मनके दिए ये शाम कैसी। क्यों०

आज कोई पूड़ियां पकवान खाये
और कोई भूख से आंसू बहाये।

समय बन कर के सवाली रो रहा है
आज दीवालो लगे समशान जैसी। क्यों०

कितनी माताएँ विलख कर कह रही हैं
लाल सो जा क्यों निगाहें बह रही हैं।

कल तुझे रोटी नमक और तेल दूंगी
वीर भारत के तेरी तकदीर कैसी। क्यों०

# 'बिना स्नेह की बाती जल रही है।'

—शकुन्तला सिरोठिया

मेरी गली में दिन भर कम से कम २० या २५ बच्चे खेलते हैं, सुबह से शाम तक। कभी कुछ चले जाते हैं तो दूसरे आ जाते हैं। अनुपात बना रहता है। गरीबों के बच्चे नहीं हैं, बेंत से कुरसी मेज आदि बनाने वालों के बच्चे हैं, खाते पीते माँ-बाप के बच्चे। क्या मजाल कोई उन बच्चों को डरा धमका दे या मार दे। माँ बाप तुरन्त दुधारी तलवार लेकर मैदान में आ जायेंगे। १०, १२ वर्ष का बच्चा बेंत छीलने, कुर्सी मेज में कील ठोकने के काम में अपने माता-पिता के साथ लग जाता है। किन्तु इन्हें पाठशाला में डालने की चिन्ता किसी को नहीं है। गाली गलौज मारपीट करने का अभ्यास इन्हें अच्छा है। माता-पिता रहते, साधन होते, ये अनाथ हैं।

दूसरा दृश्य उन बच्चों का है जिनके माता-पिता गरीब तो हैं ही, शराबी जुआरी भी हैं। ये बच्चे किसी के घर में काम करने लगते हैं। कमाकर माता-पिता के हाथ में थमा देते हैं, उनकी शराब जुआ का साधन जुटा देते हैं। बदले में क्या मिलता है इन्हें? मार, गाली और आधा पेट भोजन। मेरे घर में एक लड़की काम कर रही है, पिछले ८ वर्ष से। दुबली पतली, एक सीमा तक रोगी भी। चार-पाँच साल की थी तभी माँ मर गयी दूसरे साल पिता भी स्वर्ग चला गया। एक सगा भाई और दूसरा सौतेला बाप का जाया सौतेला भाई, जिसकी शादी हो गयी है। सगे भाई को सौतेले भाई ने मार कर भगा दिया है। अब ये तीन बहनें बची हैं। बड़ी की शादी हो गयी है। दो बहनें घरों में चौका बर्तन करती हैं। प्रत्येक लगभग सौ-सौ रुपये कमाकर भाई भावज को दे देती हैं!

मेरे यहाँ काम करने वाली लड़की शुरू से बीमार रहती है। खूब बड़ा पेट, पीला चेहरा सफेद आँखें। हमारे यहाँ से खाना मिल जाता है। एक बार भर पेट नहीं, थोड़ा-थोड़ा करके तीन बार में। अब स्वस्थ हो चली है। हमीं से जेब खर्च भी मिल जाता है। वेतन तो पहली तारीख को ही भावज आकर ले जाती है।

लड़की जब ज्यादा बीमार पड़ जाती है तब हमीं उसकी दवा कराते हैं। उस अवस्था में दिन भर घर नहीं जाती। हमीं उसको दवा देते हैं।

प्रश्न उठता है यह बच्ची कहाँ जाय? कमाये नहीं तो क्या खाय? दो सूखी रोटी भी भाई के घर में नहीं मिलती। कपड़े हमीं देते हैं। जाड़े में स्वेटर, शाल भी हमीं से मिलता है। यदि हम उसके भाई-भावज से कुछ कहें या समझायें तो वह हमारे यहाँ भेजना बन्द कर देगो। भाई शराबी है। क्रोध आने पर उसकी अच्छी धुनाई कर देता है। भावज अपनी मरी सास को गाली देती है, "ये कीड़े मकोड़े हमारे हिस्से छोड़ गयी है। इन्हें भी अपने पास बुला लेती तो चैन मिलता।"

यह एक इसी लड़की की कहानी नहीं है। हर गली कूचे में यह लड़की और ऐसे अभिभावक माता-पिता मिल जायेंगे! कहाँ जायें ये बच्चे? सरकार की ओर से देश के नौनिहालों का कोई पुरसा हाल नहीं है। जो लड़के होटल और दूकानों में काम करते हैं, न उन्हें नींद भर सोने को मिलता है और न पेट भर

भोजन। यदि वे काम नहीं करते तो घर में तो गाली मार खाते ही हैं बाहर भी इनकी जिन्दगी आवारा लड़कों की सोहब्बत में दो कौड़ी की ही हो जाती है। चोरी जुआ जैसे गर्हित काम करना सीख जाते हैं।

तीसरा दृश्य भी है उन बच्चों का जो बहुत सम्पन्न घर के चिराग कहे जाते हैं, जिनके जन्म दिवस धूमधाम से मनाये जाते हैं, जिन्हें बड़े-बड़े उपहार मिलते हैं। उन्हें नौकर चाकर अच्छा खाना-पीना सब मिलता है। नहीं मिलता तो बस प्यार। बाप आफिस या व्यवसाय में व्यस्त रहता है तो माँ अपनी माडर्न सोसायटी, घर और स्वयं को सजाने में व्यस्त। बच्चा घर में माँ बाप धन दौलत सब रहते हुए भी एकाकी। न उसे माँ की गोद मिलती है न बाप कीं बाहें। बड़े होने पर स्कूल का पराया-पराया वातावरण जहाँ कर्तव्य और उपदेश तो उपलब्ध होता है किन्तु प्यार नही। ऐसे बच्चे सब तरह सनाथ होते हुए भी अनाथ हैं।

चौथा दृश्य उन मासूम चेहरे वाले बच्चों का है जो दिन भर हाथ फैलाये गिड़गिड़ाते हुए आते आते लोगों का दामन पकड़ लेते हैं—दे दो अम्मा, दे दो बाबा, कुछ दे दो भूख लगी है। आप ट्रेन में बैठे अपना खाना निकाल कर बैठते हैं कि आवाज आती है—बाबा हमें भी कुछ दे दो। बहुत भूख लगी है एक टुकड़ा हमें भी—

बच्चे की भूखी ललचायी दृष्टि को देख कर आपके हाथ से गुस्सा छूट जाता है। मुँह तक हाथ ले जाने की हिम्मत नहीं होती। लेकिन तब हम और आप क्या करें? कैसे इन समस्याओं को सुलझायें? इसकी जड़ कहाँ है? यह वह अमर बेल है जिसे आप सारी जिन्दगी ढूंढ़ें किन्तु नहीं मिलेगी। इस अमर बेल के टुकड़ों को गलत नीति ने इधर-उधर फैला दिया है। अब वह सब पौधों और पेड़ों पर छा गयी है।

ये मासूम, अनाथ बच्चे दीप की उस बाती की तरह जल रहे हैं जिसमें तेल ही नहीं है और धीरे-धीरे सुलग कर जवान होने के लिए ये बच्चे मजबूर हैं।

लेकिन एक बात .... गहरे जल में डूबने वाला भी यदि जीवन की उत्कट लालसा लेकर हाथ पैर मारता है तो येनकेन प्रकारेण किनारा पा ही लेता है।

हम भी यदि चैतन्य सजग होकर समस्या का हल ढूढ़ें और समाज तथा शासन को भी झकझोरें तो कुछ न कुछ हल मिल ही जाएगा। यदि आज हमने समस्या का हल नहीं ढूँढ़ा तो कल का हमारा राष्ट्र भी सुरक्षित नहीं रह सकेगा।

संकलनकर्त्री—सपना सोनकर, कक्षा-८

—:o:—

# सम्मोहन - शक्ति

—श्रीमती अरुणा त्रिपाठी, "अनु"
एम० ए० ( इति० हिन्दी ), बी० एड०, अध्यापिका

'तुम कुछ काम क्यों नहीं करते ? अपनी विद्वत्ता का कुछ तो उपयोग करो।' ये शब्द एक नारी के कण्ठ के थे। पुरुष बोला—'क्या करूँ ? मुझे कोई काम मिलता ही नहीं। खैर, कल राजदरबार में जाकर देखूंगा।'

किन्तु बात पूरी होने के पहले हम इनका परिचय भी दे दें। यह पुरुष जिसका नाम इन्द्रदेव था, सम्मोहन विद्या का जानकार था। यह नारी उसकी पत्नी थी। पुरुष कोई रोजगार न मिलने के कारण महीनों से बेकार बैठा था। फलतः पति-पत्नी में झगड़ा होना स्वाभाविक ही था। अस्तु !

अगले दिन इंद्रदेव दरबार में पहुँचा। उसने राजा को अभिवादन किया। राजा ने उससे आने का कारण पूछा। इन्द्रदेव ने कहा—'महाराज ! मेरा नाम इन्द्रदेव है। मुझे सम्मोहन विद्या का पूर्ण ज्ञान है। आप मुझे सेवा करने का अवसर दीजिए।' यह बात सुन कर राजा ने कहा—'पहले तुम अपनी विद्या का प्रदर्शन करो तब मैं सोचकर तुम्हें रखूँगा।' इन्द्रदेव ने उसी समय सामूहिक सम्मोहन किया। दरबार के प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा लगा कि चारो ओर से पुष्प वर्षा हो रही है। राजा यह देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा—"मैं तुम्हें ५००० रु० मासिक वेतन पर रखता हूँ।" इन्द्रदेव यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने घर जाकर अपनी पत्नी को यह बात बताई। वह सुन कर बहुत खुश हुई। उसने उससे कहा— 'अब तुम रोज वहाँ जाना और अपने गुणों का प्रदर्शन करना।'

अगले दिन वह राजा के पास गया। उसने राजा से कहा – 'जब आप आज्ञा देंगे, आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा।' यह कह कर वह वहाँ से चला आया।

समय का चक्र चलता रहता है। हर एक व्यक्ति का भाग्य कभी न कभी चमकता ही है और उसकी परीक्षा होती है। यही तथ्य इन्द्रदेव पर भी चरितार्थ हुआ।

एक दिन राजा के जासूसों ने आकर बताया कि उसके पास ही के एक राजा ने उन पर हमला करने का निश्चय किया है। खबर भयंकर थी। राजा की कोई तैयारी नहीं थी। खैर, जल्दी ही तैयारियाँ की गयीं। तब तक दूसरे राजा ने धावा बोल ही दिया। तब इस राजा ने सोचा कि ऐसे समय में शायद ही हम जीत पाएँ क्योंकि तैयारियाँ पूरी नहीं हैं। उसने इन्द्रदेव को बुलाया और कहाकि सम्मोहन करके शत्रु सेना को लौटा दो। इन्द्रदेव ने राजा की आज्ञा शिरोधार्य कर ली। इन्द्रदेव अनेक सैनिकों द्वारा शत्रु सेना के सामने ले जाया गया। शत्रु सेना को इन्द्रदेव की विद्या की कोई जानकारी नहीं थी उसने कुछ सैनिकों को देखते ही गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया। तभी इन्द्रदेव ने सामूहिक सम्मोहन किया। पूरी सेना को ऐसा लगा कि चारो ओर से तोपों के गोले गिर रहे हैं तथा भयानक

विस्फोट हो रहा है। प्रत्येक सैनिक को ऐसा मालूम हो रहा था कि गोले उसी पर गिर रहे हैं। सेनापति ने लौट कर अपने राजा से कहा—'महाराज! दूसरे राज्य में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने आकर सम्मोहन विद्या से हमें परास्त कर दिया।' शत्रु राजा ने दुबारा सेना भेजी, परन्तु सेना डरकर फिर लौट आई।

तब शत्रु राजा ने अपने दरबार में कहा—जब तक वह व्यक्ति नहीं चला जाता, हम वह देश नहीं जीत सकते।' इसलिये राजा ने एक जासूस उस देश में भेजा ताकि वह सम्मोहक को समाप्त कर दे या पकड़ कर ले आये।

रात के अन्धकार में इन्द्रदेव अपनी पत्नी के साथ अपने घर में बात कर रहा था। उसकी पत्नी ने कहा—"तुम दो बार खतरा मोल ले चुके हो। अब सावधान रहो; क्योंकि शत्रु राजा के लोग तुम्हें अवश्य पकड़ेंगे।" इन्द्रदेव भी समझ गया। कुछ ही समय पश्चात् जासूस वहाँ आया। उसने इन्द्रदेव को देखते ही दरवाजा खटखटाया। उसका विचार था कि पिस्तौल दिखा कर काला कपड़ा आँखों पर बाँध दूँगा। फिर राजा के पास ले चलूँगा किन्तु इन्द्रदेव पहले से ही सतर्क था उसने सोचा कि इतने अन्धकार में शत्रु के अलावा और कोई नहीं आ सकता, क्योंकि वह इस समय अंधेरे में सम्मोहन करने में असमर्थ है। उसने कमरे में दीपक जलाया और खिड़की से दीपक की रोशनी में जासूस को देखा, एक क्षण के लिए दोनों की आँखें मिल गयीं। जासूस ने तुरन्त ही गोली चलाने की कोशिश की पर उसे ऐसा लगा कि उसकी पिस्तौल हाथ से छूट कर हवा में उड़ गई है। उसके पश्चात् उसे लगा कि वह हिल भी नहीं सकता। उसने बहुत कोशिश की, किन्तु व्यर्थ। सुबह होते ही उसे राजा को सुपुर्द कर दिया गया। जब शत्रु राजा के यहाँ न तो जासूस आया न इन्द्रदेव ही तब उसने समझ लिया कि जासूस पकड़ लिया गया।

इस प्रकार शत्रु राजा की दुश्मनी दूसरे राजा से न होकर इन्द्रदेव के साथ हो गई। उसने अपने छः जासूसों को पकड़ लाने के लिए भेजा। अब तक इन्द्रदेव काफी सतर्क हो चुका था। वह घर में बैठा था कि तभी खिड़की से कई आदमियों ने आकर उसकी आँखों में जबरदस्ती पट्टी बाँध दी और उसे शत्रु राजा के पास लेकर चले गये।

अब इन्द्रदेव पट्टी के साथ शत्रु राजा के समक्ष उपस्थित किया गया। यह देख कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—"मैं तुम्हें ही चाहता था। अब यदि जिन्दा रहना चाहते हो, तो अपनी विद्या का रहस्य बता दो।" इन्द्रदेव ने साफ अस्वीकार कर दिया। यह सुनकर राजा ने उसे जल्लाद को सुपुर्द कर दिया। जल्लाद को यह नहीं मालूम था कि इसकी आँखों पर पट्टियाँ क्यों बाँधी गई हैं। उसने इन्द्रदेव से पूछा कि उसकी अंतिम इच्छा क्या है। इन्द्रदेव ने बनावटी दुःख से उत्तर दिया, "मैं मरने के पहले इस संसार को एक बार देखना चाहता हूँ, क्योंकि मेरे हाथ बँधे हैं और आँखें कुछ खराब होने से पट्टी बँधी हैं। यह सुन कर जल्लाद ने कहा, "अरे तुम मुझे मूर्ख बनाना चाहते हो। अवश्य ही तुम्हारी आँखों में ही कुछ शक्ति है जिसके कारण तुम सम्मोहन करते हो।' यह कर उसने तलवार उठाई और पट्टी को जरा और कसना चाहा किन्तु पट्टी ढीली पड़ गई और इन्द्रदेव की नजर जल्लाद से मिल गई। नजर मिलते ही इन्द्रदेव ने जल्लाद को सम्मोहित कर दिया। उसको वैसे ही छोड़ कर इन्द्रदेव पीछे के दरवाजे से भागा। वह रास्ते में अनेक व्यक्तियों तथा पहरेदारों को सम्मोहित करता हुआ महल से बाहर हो गया। अब वह शत्रु राज्य की सीमा से बाहर हो रहा था। सैनिकों को पता चल गया कि इन्द्रदेव भाग गया है। वे घोड़े दौड़ाते हुए वहाँ पहुँचे। इन्द्रदेव पैदल था और वे घोड़ों पर। उन्होंने उस पर गोलियाँ चलाईं और इन्द्रदेव वहीं गिर पड़ा। शत्रु सैनिक उसे मरा समझ कर लौट गये।

तभी इन्द्रदेव के देश के राजा के सैनिक उसे खोजते-खोजते वहाँ पहुँच गये।

जब उसे उसके राजा के समक्ष उपस्थित किया गया तब राजा ने अनेक वैद्यों को बुलाकर उसकी चिकित्सा की व्यवस्था की। वैद्यों ने उसके बचने की आशा छोड़ दी। यह देख कर इन्द्रदेव की पत्नी विलाप करने लगी। वह प्रसिद्ध वैद्यों को अपने साथ लाई। अथक परिश्रम के पश्चात् इन्द्रदेव बचाया जा सका। लगभग छः महीने में वह पूरी तरह ठीक हो गया। तब तक राजा ने पूरी तैयारियाँ करके शत्रु राजा पर आक्रमण कर उसे परास्त कर दिया। अब इन्द्रदेव को राजा द्वारा एक विशाल भवन प्रदान किया गया, जिसमें वह अपनी पत्नी के साथ राजा के संरक्षण में सुख पूर्वक रहने लगा।

—★—

# चट्टान की रोशनी

मधुपाल सिंह कक्षा-८

किसी गाँव में एक आलसी लड़का रहता था, जिसका नाम जुमा था। यदि कोई गलती जुमा से हो जाती तो सारा गाँव उसका मजाक उड़ाता। जुमा हर समय झील के किनारे लेटा रहता था। झील बहुत बड़ी थी। झील के दोनों किनारे पर गाँव बसे थे। इस गाँव से थोड़ी दूरी पर एक चट्टान था जिसका नाम 'मौत की चट्टान' रखा गया था। यह चट्टान आधी से अधिक पानी में डूबा-था। एक दिन इस पार के गाँव में कोई उत्सव मनाया जा रहा था। उस पार के मुखिया को उसी दिन कोई जरूरी काम था। इस पार के मुखिया और गाँव के लोग अपने मेहमान की राह देख रहे थे। राह देखते-देखते रात हो गयी और झील में तूफान आ गया। अब सबकी नजरें 'मौत की चट्टान' की ओर उठीं।

मुखिया बोला—अब क्या करें, कहीं मे मान चट्टान से टकरा न जाय। यदि ऐसा हुआ तो इस गाँव के लिए कितनी शर्मनाक बात होगी। अब रात का अंधकार और बढ़ गया, झील में बहुत तेज तूफान हो गया। मुखिया और दूसरे लोग यह सोच कर घर चले गये की मेहमान ने अपनी यात्रा रद्द कर दी।

किन्तु आधी रात को जब मेहमान सुरक्षित इस पार पहुँच गया तो सब जग गये। मेहमान थकी हुई आवाज में बोला समझो मौत के मुँह से बच कर आया हूँ। मुझे मौत के चट्टान के बारे में कुछ न पता था। मेरी नाव उस चट्टान से टकराने वाली थी कि उस चट्टान से रोशनी आई। और मैं टकराने से बच गया। उस मेहमान ने बोला आओ मेरे साथ। सभी झील के किनारे गये और देखा कि चट्टान से रोशनी निकल रही है।

यह रोशनी किसने जलाई होगी सबके जुबान पर यही सवाल था। जुमा का दोस्त आगे बढ़ कर बोला यह काम अपने जुमा का ही है। उसने यह सुन लिया कि यदि मुखिया इस पार सुरक्षित नहीं पहुँचा तो इस गाँव की बदनामी होगी। वह मुझसे बोला जब तक मैं जिन्दा हूँ गाँव पर आच न आने दूँगा।

वे सब जानते थे कि जुमा मर गया होगा। उधर तूफान जोरों पर था। सबकी आँखों में आँसू आ गये। गाँव वालों ने जुमा की याद में उस चट्टान का नाम रोशनी वाला चट्टान रख दिया।

—:०:—

# मुन्ने की फरियाद

—बच्चन पाठक 'सलिल'

पापा, मम्मी, टीचरजी, सब खाते हैं जान
होम वर्क के लिए मुझे, करते हैं हैरान
कभी कापियां, कभी पेंसिलें, कभी पुस्तकें भाई
गुम हो जातीं खोज-खोजकर, मति जाती बौराई !

अंकल अलग पढ़ाते हैं
पापा डांट लगाते हैं
'सरजी' कहते 'बोका' मुझको
भैया रोज चिढ़ाते हैं !

अंकगणित कर, चित्र बनाना, हिज्जे करना याद
'होम वर्क' का भारी बोझा, टीचर देती लाद,
'होमवर्क' ने कर डाला बचपन मेरा बरबाद
सम्पादकजी तुम्हीं सुनो अब मेरी यह फरियाद

मेरी यह फरियाद सुनो
अब मैं शोर मचाऊँगा
मुझ पर मत अन्याय करो
बचपन मैं न गवाऊँगा !

तितली के पीछे दौड़ूँगा, चाकलेट मैं खाऊँगा
ज्यादा होमवर्क होगा तो, मैं स्कूल न जाऊँगा !

संकलनकर्ता—चन्द्रप्रदीप सिंह, कक्षा-४

# काशी : धार्मिकता के आइने में

अखिलेश मिश्र, ( भू०पू० छात्र )

संसार की प्राचीनतम नगरियों में काशी का नाम सर्वप्रमुख है। रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में भी काशी का वर्णन मिलता है। इसे भारतवर्ष की सांस्कृतिक राजधानी भी कहा जाता है परन्तु काशी की धार्मिकता तो सर्वविदित है। उत्तरवाहिनी मन्दाकिनी के अर्धचन्द्राकार तट पर बसी यह सुरम्य काशी नगरी युगों-युगों से धर्म तथा संस्कृति का हृदय स्थल रही है तथा आज भी शिक्षा तथा ज्ञान के प्रकाश से सम्पूर्ण भारतवर्ष ही नहीं वरन् विश्व को आलोकित कर रही है।

काशी के घाट, यहाँ के मन्दिर तथा घाटों पर लगी छतरियाँ इसकी एक अलग पहचान बनाते हैं। काशी को गलियों और मन्दिरों का शहर कहा जाता है। अमूमन यहाँ की हर गली में आपको कोई न कोई मन्दिर अवश्य मिलेगा। शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक ज्योतिर्लिंग काशी विश्वनाथ के नाम से विश्व विश्रुत है। महारानी अहिल्या बाई द्वारा स्थापित इस मन्दिर के शिखर को पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने ४० मन सोने के पत्तरों से मढ़वाया था। बाहर से आने वाला हर यात्री बिना इस मन्दिर में दर्शन किये अपनी यात्रा को अधूरा समझता है। इसके अतिरिक्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिसर में स्थित विश्वनाथ मन्दिर भी संगमरमर की बेजोड़ कारीगरी के कारण प्रसिद्ध है। इनके अलावा काशी में छत्तीस करोड़ देवताओं का निवास है ऐसा कहा जाता है।

काशी नगरी अपने आप में सम्पूर्ण भारतवर्ष को समेटे हुए है। इसके विभिन्न मुहल्लों में मानों अलग-अलग प्रान्त वसे हुए हैं। बंगला भाषी बंगाली टोला में तो तमिलवासी केदारघाट और हनुमानघाट में, अगस्तकुण्डा में केरलवासी तो मराठे दुर्गाघाट में, सिन्धी लाजपतनगर में तो मारवाड़ी नन्दन साहू लेन में, गुजराती सूतटोला में तो नेपाली बिन्दु माधवघाट पर मिलेंगे। मुसलमान मदनपुरा, कोयला बाजार आदि क्षेत्रों में तो ईसाई कैन्टोनमेन्ट क्षेत्र में। अलग प्रान्त, अलग भाषा, अलग संप्रदाय होने के बावजूद ये सभी सौहार्द्र पूर्वक भाई चारे की अटूट कड़ी से आपस में जुड़े हैं और बनारसी कहलाने में गर्व का अनुभव करते हैं।

भले ही यहाँ विभिन्न मतों को मानने वाले लोग रहते हैं, अपने-अपने ढंग से अपने आराध्य की उपासना करते हों, किन्तु दूसरे धर्मों का भी उतना ही आदर करते हैं। हिन्दू और मुसलमान एक ही घाट पर साथ-साथ डुबकी लगाते हैं। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में जब काशी विश्वनाथ मन्दिर में आरती का घंटा बजता है तो उधर ज्ञानवापी की मस्जिद से अजान की ध्वनि सुनाई देती है। गिरजाघर से बाईविल का पाठ होता है तो गुरुद्वारे से गुरुबानी का भी प्रसारण सुनाई देता है। इन सबको यहाँ के

निवासी एक ही श्रद्धा व आदर के साथ सुनते हैं। यही नहीं चाहे होली हो या ईद, चाहे वैशाखी का पर्व हो या बड़ा दिन, सभी सम्प्रदायों के लोग एक साथ गले मिलकर एक दूसरे को मुबारकबाद देते हैं और एक दूसरे की खुशियों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। भाईचारे की यह अनुकरणीय भावना अन्यत्र दुर्लभ है।

जैन तथा बौद्ध धर्म के समर्थक भी यहाँ बहुतायत में रहते हैं। सारनाथ तो बौद्ध मतावलम्बियों का प्रमुख तीर्थ है। यहीं बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था। इस प्रकार प्रत्येक धर्म की धारायें काशी में आकर सम्मिलित हो गयी हैं।

कुल मिलाकर यदि कहा जाय कि काशी शरीर है और धार्मिकता उसका प्राण तो अतिशयोक्ति न होगी। जिस प्रकार प्राण बिना शरीर का कोई अर्थ नहीं है उसी प्रकार धार्मिकता के बिना काशी की कल्पना ही व्यर्थ है। काशी और धर्म एक दूसरे के पर्याय हैं। धार्मिकता यहाँ और यहाँ के निवासियों में रची बसी है।

★

दो लड़के कार से कहीं जा रहे थे। कार तेज भाग रही थी।

एक ने दूसरे से पूछा—अगर यह कार ३०० मील प्रति घण्टा की चाल से चले तो हमलोग कहाँ पहुँच जायेंगे ?

दूसरे ने उत्तर दिया—या तो ऊपर या अस्पताल में।

× × ×

दो भाई थे। दोनों रेडियो का खेल खेल रहे थे। बड़े ने कहा तुम एनाउन्स करो मैं प्रोग्राम दूँगा। दोनों में कोई एनाउन्स करना नहीं चाहता था, दोनों ही कार्यक्रम प्रस्तुत करना चाहते थे। अन्त में बड़े ने छोटे को डाँटा तो वह डर गया और एनाउन्स करने को तैयार हो गया। उसने एनाउन्समेण्ट शुरू किया—

यह आकाशवाणी का वाराणसी केन्द्र है,
हमारी आज की सभा यहीं समाप्त होती है।

लेखनी मिश्रा, कक्षा-८

# काम छोटा और बड़ा

महात्मा गाँधी उन दिनों अफ्रीका में थे। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के रंगमंच पर अभी उनका अवतरण नहीं हुआ था फिर भी रंग भेद की नीति के विरुद्ध उन्होंने सत्याग्रह के शस्त्र का सफलता पूर्वक उपभोग किया था और अफ्रीका में मिली सफलता के कारण उनकी देश विदेश में काफी चर्चा भी हुई थी।

घटना सन् १९०९ की है। उन दिनों गांधीजी लन्दन गये हुए थे। लन्दन में ही कुछ भारतीय नवयुवक भी पढ़ रहे थे। जब उन्हें पता चला कि बिना हथियार के लड़ाई लड़ने वाला और लड़ाई में जीतने वाला एक अद्भुत भारतीय सेनानी यहाँ आया हुआ है तो बरबस ही उनकी आकांक्षा इस अद्भुत सेनानी को अपने बीच बुलाने की हुई।

नवयुवक भारतीय छात्रों के प्रतिनिधि महात्मा गांधी से मिले और उन्होंने सम्मान में आयोजित समारोह में उनसे भाग लेने के लिए अनुरोध किया। गांधीजी ने भारतीय छात्रों का उत्साह देखकर उनका मन रखने के लिए जलसे में भाग लेना स्वीकार कर लिया। यही नहीं छात्रों के अनुरोध पर उन्होंने समारोह का सभापतित्व करना भी स्वीकार कर लिया। इस समारोह में एक भोज का आयोजन भी निश्चित किया गया था। गांधीजी ने भोज की स्वीकृति तो दे दी पर उसके साथ एक शर्त लगा दी कि इस अवसर पर जो भोज दिया जायेगा उसमें मांस और शराब का प्रयोग नहीं किया जायेगा।

विद्यार्थी अपने-अपने कामों में इस प्रकार व्यस्त थे कि किसी की ओर देखने का अवकाश ही नहीं। उन विद्यार्थियों के बीच एक दुबला पतला भारतीय युवक भी था जो दौड़-दौड़ कर काम कर रहा था। यह युवक थालियाँ माँज रहा था और बरतन साफ कर रहा था। एक काम से कोई बरतन खाली होता तो दूसरे काम में उपयोग करने के लिए चट से वह युवक खाली बरतन ले आता तथा उसे साफ करके रसोई का काम कर रहे छात्रों को दे आता।

जब भोजन बनकर तैयार हो गया तो आगन्तुक छात्रों ने भोजन किया। जिन विद्यार्थियों ने उस भोज की व्यवस्था का दायित्व सम्हाला था, भोजन परोसने और जूठी थालियाँ साफ करने का काम भी उन्हें सौंपा गया था। वे जूठी थालियाँ उठाकर लाते और बरतन माँजने वाले के सामने रख जाते ताकि उसकी सफाई हो सके। अब इस काम में अन्य छात्र भी जुट गये थे और काम तेजी से होने लगा था। जब सभी लोग भोजन कर निवृत्त हो गये तो छात्र समिति के उपप्रधान ने स्वयंसेवकों से भोजन के लिए कहा।

वह अजनबी युवक अब भी अपने काम में लगा हुआ था। उपप्रधान उस अजनबी युवक के पास यह कहते पहुँचा जल्दी भोजन कर लो मित्र। गांधी आते ही होंगे, फिर उनके साथ सबको बैठना है।

अजनबी युवक अपने हाथ की थाली साफ कर रखते हुए उठा तो उसे देखकर उपप्रधान दंग रह गया। उसके मुँह से आश्चर्य मिश्रित चीत्कार सी निकल उठी। गांधीजी आप ! आपको यह करने की क्या आवश्यकता थी ?

आस-पास खड़े अन्य छात्र गांधीजी को अपने बीच इस प्रकार पाकर दंग रह गये। सभा में उपप्रधान ने गांधी जी से क्षमा माँगी कि उन्हें किसी ने पहचाना नहीं और यह काम सौंप दिया।

इसके तुरन्त बाद गांधीजी ने इस स्पष्टीकरण से अपना भाषण आरम्भ किया— अकारण खेद मनाने की आवश्यकता नहीं है। मैंने स्वेच्छा से यह काम चुना था और काम कोई भी छोटा नहीं है और नहीं कोई बड़ा। सब काम काम है। हम लोग अपने परिवार में भी तो यह काम करते हैं। वहाँ तो कोई किसी काम को छोटा बड़ा नहीं मानता फिर आप व्यर्थ क्यों दुःखी हो रहे हैं ?□

संकलन—शैल दूबे, कक्षा-५

# श्रेष्ठ बाल-साहित्य

—चन्द्रपाल सिंह यादव 'मयंक'

श्रेष्ठ बाल साहित्य वही है—
जो चरित्र — निर्माण —
करके करता है बच्चों के
जीवन का उत्थान !!

जो चरित्र की रचना करता—
रचनात्मक साहित्य !
ऊटपटांग कल्पना वाला
है सतही साहित्य !

रंग-बिरंगी चित्र कथाएँ
केवल मन बहलातीं।
जादू - टोने, भूत - प्रेत की
कहानियाँ दिखलातीं !

वह यथार्थ से दूर, व्यर्थ का
होता है साहित्य।
बच्चों का कुछ हित - साधन
क्या करता वह साहित्य ?

शुद्ध मनोरंजन जो करता
नहीं बढ़ाता ज्ञान !
ऊटपटांग कल्पनाओं का
बतलाता आख्यान !

"सत्साहित्य नहीं होता वह"
कहते हैं विद्वान !
उसका पढ़ना और न पढ़ना
दोनों एक समान !

मन बहलाता, ज्ञान बढ़ाता,
नई दृष्टि दे जाता !
नन्हें - मुन्नों के जीवन में
नये भाव भर जाता।

संकलनकर्ता—विश्वनाथ यादव, कक्षा-८

## सोते हो ? नहीं, जीते हो ? नहीं

एक बार भगवान् बुद्ध एक रात्रि प्रवचन कर रहे थे। प्रवचन सुनने के लिए बैठा हुआ व्यक्ति बार-बार नींद के झोंके ले रहा था। तथागत ने उस उँघते हुये व्यक्ति को कहा-'वत्स सो रहे हो'-नहीं भगवन्! हड़बड़ा कर उँघते हुये व्यक्ति ने कहा। प्रवचन पूर्ववत् चालू हो गया और उक्त श्रोता भी पहले की तरह उँघने लगा। भगवान बुद्ध ने तीन-चार बार उसे जगाया परन्तु वह नहीं 'भगवन्' कहता और सो जाता। अन्तिम बार तथागत ने पूछा—'वत्स जीवित हो' 'नहीं भगवन्'—सदा की तरह उत्तर दिया श्रोता ने। श्रोताओं में हँसी की लहर दौड़ गयी। भगवान बुद्ध भी मुस्कराये फिर गम्भीर होकर बोले-वत्स निद्रा में तुमसे सही उत्तर निकल गया। जो निद्रा में है वह मृतक समान है। जब तक हम विवेक और प्रज्ञा में नहीं जागते हैं तब तक जीवित और बुद्धिमान् कहलाने के अधिकारी नहीं।

मनुष्य का कल्याण करने में समर्थ उसकी प्रज्ञा है, यह प्रज्ञा शक्ति जिस स्रोत से उमड़ती है उसे महाप्रज्ञा या गायत्री कहते हैं। गायत्री उपासक में प्रज्ञा बुद्धि का—मेधा—शक्ति का विकास स्वयं ही होने लगता है।

( प्रज्ञा पुराण-पृष्ठ २७ )

## गुलाब की प्रसन्नता का रहस्य

एक धनी ने गुलाब के पुष्प से पूछा—तुम इतने नुकीले काँटों से घिरे रहते हो फिर भी तुम्हारी प्रसन्नता में कोई कमी नहीं आती। जब देखो तब मुस्कराते ही रहते हो। जब कि मैं सब सुख सुविधाओं से सम्पन्न रहने पर भी चिन्ता और निराशा में घिरा रहता हूँ। मित्र, क्या अपनी इस मुस्कराहट का रहस्य मुझे भी बता सकोगे ताकि तुम्हारी तरह मैं भी प्रसन्न रह सकूँ।

... क्यों नहीं? मेरी प्रसन्नता का रहस्य तो स्पष्ट है। मुझे ईश्वर से वरदान स्वरूप तीन वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं—रस, रूप और सुगन्ध। पर इन वस्तुओं को मैं अपनी नहीं मानता। जिसने दी हैं उसी की सृष्टि में निवास करने वाले व्यक्तियों को निःस्वार्थ लुटाता रहता हूँ। यदि मेरी तरह मुस्करा कर दूसरों का मन हरना चाहते हो, तो ईश्वर द्वारा प्राप्त सम्पत्ति को दूसरों की सेवा सहायता में खर्च करते रहो।

परमात्मा का सच्चा अनुग्रह और प्यार वस्तुतः उदार परमार्थियों को ही मिलता है। राम का नाम लेने वाले लाखों लोग राम का काम करने वाले अकेले हनुमान से ही हलके पड़ जाते हैं फिर यदि ईश्वरीय कार्य-सत्कर्म और परमार्थ की परम्परा ही चल पड़े तब तो धरती ही स्वर्ग बन सकती है।

(प्रज्ञा पुराण-पृष्ठ ३५)

संकलनकर्ता- प्रभासशंकर शुक्ल, कक्षा-४

# "ममता"

राजेन्द्र कुमार शर्मा, कक्षा-७

देखो विकट धरा की ममता
पाप, पुण्य से तौल रही है।

कभी आस की किरण न बुझती
अभिलाषा की आह निकलती,
द्वन्द-युद्ध के बीच में जाकर
माँ बच्चों से प्यार भी करती।

बन्द करो नफरत की बातें
आज धरा यह बोल रही है।

अन्धकार अज्ञान देखकर
देखो ममता विलख रही है,
आपस के सब प्रेम मिट गये
मजहब की दीवार खड़ी है।

बन्द करो मजेहब की बातें
आज धरा यह बोल रही है।

अपनी झूठी आजादी में
मां को तूने कैद किया है,
कितनी चोट सही ममता ने
फिर भी तुझको प्यार दिया है।

बन्द करो सरहद की बातें
आज धरा यह बोल रही है,
देखो विकट धरा की ममता
पाप, पुण्य से तौल रही है।

# लोमड़ी दादी

—जयशंकर बाजपेयी

जंगल में एक पुराने बरगद के पेड़ के नीचे अपनी माँद बना कर एक लोमड़ी रहती थी। वहाँ आस-पास के सभी पशु उसका सम्मान करते थे। वह तरह-तरह की सूझ दूसरे पशुओं को बतलाया करती थीं। जिसके अनुसार काम करके जानवर सुख-चैन से बसर करते थे।

एक बार की बात है, लोमड़ी अब बूढ़ी हो चली थी। उसका स्वभाव भी अब चिड़चिड़ा हो गया था। धीरे-धीरे जानवर उसके पास आने से कतराने लगे और थोड़े ही दिनों में ऐसा हो गया कि सारा दिन बीत जाता, एक भी जानवर लोमड़ी के पास भूल कर भी न फटकता। यह सूनापन बूढ़ी लोमड़ी को जैसे खाये जा रहा था।

संयोग की बात एक दिन शाम को एक परेशान हाथी का बच्चा राय लेने लोमड़ी दादी के पास आया। देखते ही लोमड़ी बहुत खुश हुई। सोची, चलो, बहुत दिनों बाद आया तो कोई। लोमड़ी ने हाथी के बच्चे की दुःख-भरी सारी कहानी सुनी। अन्त में उसके सिर पर हाथ फेरते हुए समझाया—बेटे! जा तू शेर की मौसी से मिल ले। मेरा नाम बता देना। बस मिलने की देर है कि वह शेर को बिलकुल ठीक कर देगी। दूसरे दिन से तेरे जीवन से उस शेर का भय जाता रहेगा और तू आराम से खेलना-कूदना।

हाथी के बच्चे ने ठीक वैसा ही किया। सचमुच, उसे अब शेर का तनिक भी डर न रहा। बच्चों! शेर जंगल का राजा है। उससे सभी भय खाते हैं। पर सूझ से काम लेने और बड़ों की राय मानने से जीवन सुखी होता है। जंगल के जानवरों को लोमड़ी से कतराना नहीं चाहिये था। बूढ़ों का दिमाग चिड़-चिड़ा जरूर हो जाया करता है पर उनसे सीख सदा बढ़िया ही मिलती है।

# गन्दे कमण्डलु में खीर की भिक्षा

भगवान् बुद्ध के पास एक सेठ आत्म-ज्ञान प्राप्ति की आकांक्षा से पहुंचा। पहुँचकर आने का मन्तव्य स्पष्ट किया। दूसरे दिन उसके घर पर आकर ही उत्तर देने का आश्वास देकर बुद्ध ने उसे विदा किया। स्वयं भगवान् बुद्ध घर पर आ रहे हैं; यह सोचकर सेठ ने अच्छीं खीर बनवायी। कमण्डल लिए दूसरे दिन तथागत पहुँचे।....भगवन्! आपके लिए खीर तैयार की है। प्रसाद ग्रहण करें, सेठ ने निवेदन किया। बुद्ध ने खीर के लिए अपना कमण्डल आगे कर दिया। सेठ खीर देने के लिये आगे बढ़ा। ध्यान से देखा तो उसमें गोबर भरा हुआ था। बोला-देव! इसमें तो पहले से गोबर भरा हुआ हैं। इस पात्र में देने पर तो खीर भी बेकार हो जायेगी। तथागत हँसे और बोले....वत्स! तुम्हारे कल के प्रश्न का यही उत्तर है। आत्म-ज्ञान प्राप्ति के लिये पहले पात्रता विकसित करो—अपने कषाय-कल्मषों का परिशोधन करो। आत्मज्ञान जैसी महान उपलब्धि पात्रता विकसित हुए बिना नहीं प्राप्त हो सकती।....

(प्रज्ञा पुराण-पृष्ठ-९८)

संकलनकर्ता—सरस्वती दुवे, कक्षा-७

यथा वृक्षस्य संपुष्पितस्य दूराद् गन्धो वाति,
एवं पुण्यस्य कर्मणो दूराद् गन्धो वाति ॥

जैसे फूले हुए वृक्ष की सुगन्ध दूर-दूर तक फैल जाती है, वैसे ही पवित्र कर्मों की सुगन्ध दूर-दूर तक पहुँच जाती है ।

( नारायणोपनिषद् २/११ )

निर्मर्यादस्तु पुरुषः पापाचारसमन्वितः।
मानं न लभते सत्सु भिन्नचारित्रदर्शनः॥

जो पुरुष धर्म अथवा वेद की मर्यादा को त्याग देता है, वह पापकर्म में प्रवृत्त हो जाता है। उसके आचार और विचार दोनों भ्रष्ट हो जाते हैं, इसलिए वह सत्पुरुषों में कभी सम्मान नहीं पाता।

( वाल्मीकि रामायण )